

वाल्कोश दर्पण



संयुक्तांक 107 व 108
अक्टूबर, 2022 से मार्च, 2023



वाफ़्कोस दर्पण

संयुक्तांक 107 व 108

अक्टूबर, 2022 से मार्च, 2023

संरक्षक

आर. के. अग्रवाल

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

सह-संरक्षक

अनुपम मिश्रा

निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.)

एवं अध्यक्ष, विराकास

मुख्य संपादक

प्रेम प्रकाश भारद्वाज

प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)

संपादक

दलीप कुमार सेठी

उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)

सहयोग

शारदा रानी

वरिष्ठ सहायक

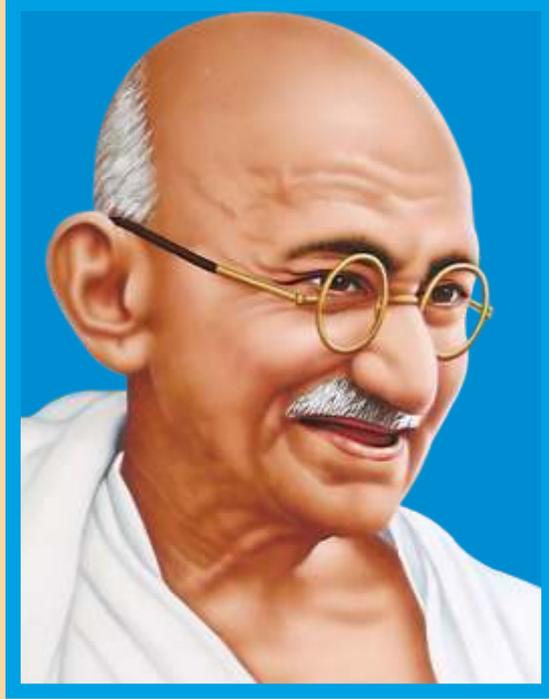
गौरव राघव

वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ संख्या
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की कलम से	3
संबोधन	4
सम्पादकीय	5
योग जीवन का आधार	6-9
राजभाषा गतिविधियां	10-11
भारत की राजभाषा से विश्व भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है : हिन्दी	12-16
कविता - अभिव्यक्ति का अलग अंदाज	17
कविता - परीक्षा-एक पहेली	17
कविता - कविता है मेरी सहेली	18
सेवानिवृत्त जीवन कैसे जिए	19-24
खतरे में जनभाषा	25-27
संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा निरीक्षण	28-32
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) की बैठक	33-34
सब जल्दी में	35-36
दावत	37
ई वेस्ट से प्रदूषण का एक नया खतरा	38-39
विश्व पर्यावरण : खतरे के संकेत	40-41
सेवाकालीन प्रशिक्षण	42-43
अमृत शेरगिल - व्यक्तित्व	44-46
अनमोल शिक्षाएं - हिमाचली लोक कथा	47-48
लीडरशिप पर पड़ता तकनीक का प्रभाव	49-51
प्रदूषित आवास: बरबादी की ओर बढ़ते कदम	52-56



राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है। हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता। हिन्दी भाषा के लिए मेरा प्रेम सब हिन्दी प्रेमी जानते हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी



अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की कलम से

"वापकोस दर्पण" के इस संयुक्तांक के जरिए अपने विचार आप सभी के साथ साझा करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हिन्दी बहुत ही सरल और उदार भाषा है। सम्पर्क सूत्र बनाए रखने के लिए हिन्दी भाषा से अच्छी कोई भाषा नहीं है क्योंकि यह सबसे अधिक बोली व समझे जाने वाली भाषा है। राजभाषा हिन्दी सरकार एवं संपूर्ण देश की आम जनता के बीच संवाद की भाषा होकर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

हमारे व्यवसाय के क्षेत्र में व्यापार की अत्यंत सम्भावनाएं हैं। व्यवसाय के प्रतियोगी व वैश्वीकरण के वातावरण ने भाषा के महत्व को भी उजागर कर दिया है। व्यवसाय के क्षेत्र में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तनों के साथ हमें सकारात्मक उत्साह और नवीनतम गुणों के साथ आगे बढ़ना है।

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में वापकोस में काफी प्रगति हुई है। वापकोस के तकनीकी प्रभागों द्वारा अपने कार्यों में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग इस क्षेत्र में एक अमूल्य योगदान है। तथापि, हमें अभी भी राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिये गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना है जिसके लिए हमें सरकारी कामकाज में मूल टिप्पण और प्रारूपण के लिए हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना है। यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा।

रजनी अग्रवाल

(आर.के.अग्रवाल)

अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक
वापकोस लिमिटेड



संबोधन

‘वाक्कोस दर्पण’ के आगामी अंक 107 व 108 (संयुक्तांक) के जरिए अपने विचार आप सभी के सम्मुख रखते हुए मुझे अत्यन्त खुशी की अनुभूति हो रही है। राजभाषा नीति के अनुसार वाक्कोस में बहुत से कार्य हिंदी में किये जा रहे हैं। विभिन्न प्रभागों में अलग-अलग प्रकार का कार्य किया जाता है जिसमें उसी कार्य से संबंधित विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि हिंदी के शब्द बड़े कठिन होते हैं परन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि शब्दों का जितना ज्यादा से ज्यादा प्रयोग होगा वह उतने ही सरल लगेंगे। यदि कुछ शब्दों को लिखने में कठिनाई होती है तो उनको लिप्यांतरण करके लिखा जा सकता है।

भारत जैसे विशाल देश में अनेक भाषा-भाषियों के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो सभी को आपस में जोड़ने का कार्य करें। निःसंदेह हिंदी अपना यह उत्तरदायित्व पूरा करने में सफल रही है। आज विदेशों में भी हिंदी का काफी प्रचलन है। समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हिंदी की महत्ता, बहुलता तथा स्वीकार्यता को देखते हुए हम सभी अपने दैनिक कार्यों के साथ-साथ सरकारी कामकाज में भी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे।

मेरा सभी कार्मिकों से यह भी अनुरोध है कि वह कम्प्यूटरों पर हिंदी प्रयोग के लिए यूनिकोड का प्रयोग करें और कम्प्यूटरों पर उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं के अधिकाधिक उपयोग से हिंदी को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)

निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सम्पादकीय



‘वाष्कोस दर्पण’ गृह पत्रिका के अंक 107 व 108 का संयुक्तांक आप सभी के सम्मुख रखते हुए मुझे खुशी की अनुभूति हो रही है। भारत विविध संस्कृतियों एवं भाषाओं का देश है। हिंदी ने हमारी राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को बखूबी संजोए रखा है तथा उसके विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रत्येक व्यक्ति में असीम प्रतिभा मौजूद होती है, परन्तु लेखन एक ऐसी प्रतिभा है जो यदि जनभाषा में हो तो वह व्यक्ति की प्रतिभा को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से दूसरे व्यक्ति को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी हमारे देश में सबसे ज्यादा बोली व समझी जाती है। यह एक ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से हम अपनी बात किसी को भी बड़ी आसानी से समझा सकते हैं। यह जीवन और समाज की जरूरतों से जुड़ी एक जीवंत सशक्त और विकासशील भाषा है।

हिंदी में काम करने के लिए शब्दों को सोचने की आवश्यकता नहीं है। सरल व रोजमर्रा के शब्दों द्वारा हम अपनी बात जन मानस तक पहुंचा सकते हैं। हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।

हमें कार्यालय के दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है। प्रशासनिक कार्य तो हिंदी में किये ही जा रहे हैं, हमें तकनीकी कार्यों में भी हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना है। कार्यालय का अपना कार्य अपनी मातृभाषा हिंदी में करके आपको आत्मिक खुशी का अनुभव होगा।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं आप सभी से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में पूर्ण सहयोग के लिए निवेदन करता हूं। ‘वाष्कोस दर्पण’ पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने में आपके सुझावों का इंतजार रहेगा।

—

(प्रेम प्रकाश भारद्वाज)

प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)

एवं संपादक ‘वाष्कोस दर्पण’

“योग जीवन का आधार”

योग का मतलब है जोड़ना इंसान को परमात्मा से जोड़ना, हम तो बस हर वक्त समाज से जुड़े रहना चाहते हैं। कभी व्हाट्सएप के जरिए, फेसबुक के जरिए या तो फोन के जरिए। इस मोह माया में ऐसे फंसे हुए हैं कि सुख-सुविधाओं रूपी महबूबा के आलिंगन को छोड़ने का प्रयत्न भी नहीं कर सकते। आज का मानव, बस आराम चैन और सुकून की जिंदगी जीना चाहता है। चाहे उसके साथ लाख बीमारियां ही क्यों न आ जाएं, सब कुछ जल्दी-जल्दी चाहिए। आप सोचेंगे मैं तो अच्छा खा रहा हूं, अच्छा पहन रहा हूं, तो मुझको क्या? मैं मानता हूं कि लैपटॉप, मोबाइल और लक्जरी गाड़ियों का दौर है। लेकिन क्या कभी बड़े-बड़े मॉल में सुंदर प्रकाश में बड़े से शीशे में अपने आप को देखा है, समय से पहले सफेद बाल जिन्हें आपने बेहतरीन कलर से ढक दिया है, नजर आएं आपका झुर्रियों भरा चेहरा जो शायद समय से पहले ही आ गयीं। सबसे ज्यादा आपकी तोंद जो अभी तो आपको खाते पीते घर की निशानी लग रही होगी पर थोड़े दिनों में ये बीमारियों का घर बनने वाली हैं। कभी सोचा है। एक अच्छे से मॉल में शॉपिंग करने के बाद, पी वी आर में अच्छा सा सिनेमा देखने से, बड़े से स्टेडियम में मैच (IPL) देखने से, नामी होटल में खाना खाने के बाद भी आपको वो आत्म सुख और संतुष्टि प्राप्त नहीं हुई, जिसके लिए हम पता नहीं कब से भटक रहे हैं।

लोगों से रिश्ते निभाए, दोस्ती की, परन्तु किसी ने कलेजे को ठण्डक नहीं पहुंचाई। क्योंकि आप लाख प्रयत्न करें परन्तु आत्मा को शांति नहीं दे सकते हैं। भूल जाते हैं कि ये शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है। आखिरकार किसी दिन वो इसी में मिलकर लीन हो जाएगा।



आज का प्रदूषण, जहरीले कीटनाशक, हमारे शरीर को बर्बाद कर रहे हैं। आप सोच भी नहीं सकते कि कितने प्रकार की बीमारियों से प्रतिदिन हमारा कमजोर शरीर लड़ता रहता है। जीवनभर जिस शरीर पर आपने गर्व किया। उसकी हालत जब ज्यादा टाइट हो जाती है, जब आप बाहर का खाना खाते हैं। अपने व्यवहारिक जीवन के आलस्य के कारण भी काफी समस्याएं हमारे जीवन में आने वाली हैं ये सोच कर भी आज का मानव अपने जीवन में आमूल चूल परिवर्तन नहीं लाता। होगा क्या शरीर तो बेचारा कितना झेलेगा कभी तो जवाब दे देगा फिर क्या? तो क्या हम इन चीजों से मुक्ति पा सकते हैं, क्या डॉक्टरों के चक्कर काटे, महंगे-महंगे इलाज करवाएं, कडवी गंदी दवाइयां खाएं अपने जीवन का अनमोल समय मरीजों की तरह व्यतीत करें।

हल है योग, योग परिवर्तन का दूसरा नाम है, योग जीवन में अभी नहीं अपनाया तो टांय-टांय फिसा तो जागें! सुना होगा न जब जागो तभी सवेरा सपनों की सुनहरी दुनिया को छोड़कर, सुकून से भरी निन्द्रा को त्याग कर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ निकल जाएं किसी पार्क बगीचे या खेतों की ओर, शहरों में तो अब बाग बगीचे रहे नहीं पाठकों! अपनी सोसाइटी में ही टहलने की कोशिश कीजिए। शुरूआत तो करनी पड़ेगी कहीं से भी। आप को शुरू-शुरू में थोड़ा कष्ट जरूर होगा, परन्तु उसके बाद आप असीम सुख की अनुभूति करेंगे जब ठंडी हवा आपके चेहरे को छूती हुई आपके मन के तारों को झकझोर देगी तो आप को लगेगा जैसे आपके अंदर एक ऊर्जा का संचार हो रहा है। ये तो बस शुरूआत भर है।

अगर आप किसी गुरु के सहारे योग करने का अभ्यास करने की कोशिश करने लगेंगे तो आप पाएंगे जैसे कुछ गुम था जो मिल गया यानि कि आपको आत्म सुख की अनुभूति होने लगेगी। वैसे तो आज कल टीवी पर भी सुबह योग चैनल मिल जाते हैं। वहां से भी आप सीख सकते हैं। धीरे-धीरे योग आपकी आदत बन जाएगा। आसान ही है जरा सी सावधानी के साथ करें शुरू में चाहे थोड़ा आसन ही करें। जैसे अनुलोम-विलोम, कपालभाति, सिंहासन आदि। धीरे-2 अपने संयम के साथ आगे बढ़ें। तो जनाब इंतजार किस बात का बस आज से ही प्रण करें और निकल पड़े एक सुनहरे सफर की ओर जहाँ इन्सान का भगवान से मिलन तय है, जहाँ आप अपने आप को जान सकते हो या अपने अंदर की उर्जा का प्रयोग अपनी दिनचर्या में भी कर सकते हो।

यहाँ कुछ लोग कहेंगे कि जनाब हम तो सुबह घर से निकल जाते है, कमाने के लिए, दौड़ धूप करते हैं और अपने परिवार का पेट भरने में लगे रहते हैं। हमारा तो काम पूजा ही है, हम तो ठीक हैं! जैसे भी हैं। उन लोगों के बारे में यही कहूँगा कि आप बच नहीं सकते। आज का जलवायु परिवर्तन चैन से जीने नहीं देगा, क्योंकि हम लाख प्रयास करें पर रहना तो यहीं होगा ना इस समाज में ही। योग आप के लिए भी उतना ही जरूरी है। क्योंकि कमियां तो हम सबमें हैं, बुरी आदत चाहे एक हो या ज्यादा, होती तो सबमें हैं। और हाँ एक आदत आलस्य की आम है आज की युवा पीढ़ी में। तो उसे दूर करने के लिए बस एक अच्छी आदत अपनाये 'योग' जो आपके जीवन का आधार बनेगा। आज हमारे जीवनयापन का तरीका हम सभी को ऐसे अंधेरे कुएं में धकेल रहा है, जहां सिवाए दुःख तकलीफों के कुछ नहीं मिलने वाला, हां ये हो सकता है, किसी के जीवन में ये जल्दी चालू हो या किसी के जीवन में बाद में, पर होगा जरूर। इस अंधेरे कुएं से योग रूपी रस्सी के सहारे सब बाहर निकलें। बहुत तकलीफ देते हैं दुनिया के ताने। जब लोग आपके बारे में कभी सामने और कभी पीठ पीछे आपके शरीर के बारे में या सुंदरता की बुराईयां करते हैं।

मैं भी योग के बारे में थोड़ा बहुत जान पाया जब मैंने छत्तीस की उम्र पार की तो मुझे मेरा शरीर तकलीफ देने लगा। पता चला कि कैसर हो सकता है, अगर ऑपरेशन नहीं कराया। तो फिर क्या एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल, वही डाक्टरों के चक्कर, महँगे-टेस्ट, महँगी दवाइयाँ और एक दर्द भरा समय काटना पड़ा। अस्पताल में बिस्तरे पर लेटे हुए कई भयावह रात मैंने भी जब गुजारी तो एक दिन फिर सोचा कि क्या भला और क्या बुरा हो सकता है, शरीर का इतने इलाज के बाद, क्योंकि हर दवाई का रोग के अलावा भी दुष्प्रभाव पड़ता है, आपके विभिन्न अंगों पर। क्या इंसान बिना दवाइयों के ठीक-ठाक हो सकता है? आप ये बिल्कुल ना सोचना कि बिना आजमाये ही मैं योग की तारीफ कर रहा हूँ। जी हाँ मैंने भी शुरुआत की थी योग की पिछले साल जब मेरा दूसरा ऑपरेशन हुआ था। उसके बाद एक दिन पापाजी घर पर आये कहा अनुलोम-विलोम, आदि योग तो आप आसानी से कर सकते हो। फिर क्या था 1 या 2 हफ्ते तो घर की छत से शुरुआत की, मैं एक दिन सुबह उठा, धरती माँ को स्पर्श करके फिर रोजना के कामों से निवृत्त होकर निकल जाता धीरे-2 रोड की ओर मेरे घर से थोड़ी ही दूर सेक्टर-23 है, जहाँ आचार्य जी योग सिखाते थे, अध्यात्म की बातें बताते थे। योग करने बहुत सारे लोग वहाँ आते थे, कुछ योग करते हैं तो कुछ अपना व्यायाम। वो ये कहते थे कि जोर लगाना नहीं तरीके से करना है सबसे पहले हम लोग 9 बार गायत्री मंत्र करते थे, उसके बाद सबसे पहले शरीर को गर्म करने के लिए बैठ कर और खड़े हो कर हल्की-फुल्की कसरत। वो सबके लिए कम्पलसरी थी लेकिन अगर कोई रोग ग्रस्त है या करने में असमर्थ है तो कोई जोर जबरदस्ती नहीं थी। योग शरीर को आराम देने के साथ- साथ, दिमाग को सकुन भी देता था। धीरे-धीरे मैंने योग में नये-नये आसन सीखे जैसे कि अनुलोम-विलोम, कपालभाति, सर्वांगासन, गोमुख आसन, भाग्यी आसन, उज्जायी आसन, भुजंग आसन, मरकट आसन, सिंह आसन मैंने कुछ ही महीनों में महसूस किया जैसे मेरी शारीरिक कमजोरी दूर हो रही है, जीवन में कुछ अलग हो रहा था जैसे मेरा दिल, दिमाग और मेरी पीड़ित आत्मा में नई उर्जा का

संचार हो गया था। जो जीने की इच्छा छिन्न हो गई थी, वो अब दूर हो गई। वो सकारात्मक सोच और अच्छे विचार आने लगे तो फिर मैंने तय किया क्यों ना लिखना चालू करू। वहाँ लोगों का एक झुंड जोर-जोर से हँसने और अपने पुराने किस्से सुनाने ही आता था। ये भी अच्छा तरीका है रिटायर होने के बाद बुढ़ापे को दूर रखने का, अगर वो बस घर पर ही रहेंगे तो डिप्रेशन, एंजायटी जैसे रोगों से भी ग्रस्त हो सकते थे। वैसे मैं यहाँ आपको यह बताना चाहता हूँ कि हरियाणा में लोगों को हँसने के लिए किसी लाफ्टर क्लब की जरूरत तो नहीं होती थी, क्योंकि पहले तो हमारी जिंदगी में हँसी एक आदत की तरह होती थी, लेकिन अब वो टाइम कहां! अब हमारे जीवन में भी तनाव, प्रेशर और चिंताएं आने लगी हैं। पहले लोग चौपाल में बैठकर हँसी के ठहाके लगाते थे, एक दूसरे से सुख-दुख की बातें करते थे। प्यार और विश्वास के साथ हर समय बीत जाता था। लेकिन अब तो बस जिसे देखो वो अपने मोबाइल में घुसा हुआ है, एक ही घर में माँ-बाप, भाई-बहन अपने-अपने मोबाइल में लगे रहते हैं। आज तो शादी कार्ड भी व्हाट्स एप कर दिया जाता है, टाइम नहीं है किसी के पास किसी के लिए। बस एक कश्मकश में जिंदगी गुजर जाती है। लोग परिवार में रहकर भी एकेलापन महसूस करते हैं। डिप्रेशन, एंजायटी जैसे रोगों का नाम सुनना अब आम बात हो गयी है, ऐसा नहीं है कि बस केवल राजनीति, बॉलीवुड, बिजनेस आदि में ही ये बीमारी फैली है। अपितु समाज के हर वर्ग में ऐसे अकेले तनहा, लोग जो ऊपर से सुखी लग रहे होंगे लेकिन अंदर रोज मरते हैं, पल-2 मरते हैं। ऐसे लोगों की संख्या लाखों में हैं, समाज में रह कर भी ये प्राणी सामाजिक दूरी बनाए रहते हैं। इन के लिए बस एक ही गीत मन में आता है –

“तुम इतना जो मुस्करा रहे हो, क्या गम है जिसको छुपा रहे हो”

गम ही है जो इन सबको दीमक की तरह खोखला कर रहा है। इन सब को योग के साथ-2 प्यार और विश्वास की जरूरत न हो तो इन्हें हम खो देंगे।

योग के बारे में क्या कहें ऋषि मुनियों की मानें तो बहुत ही सूक्ष्म किन्तु अनभिज्ञ विषय है, इस पर समय-समय पर पता नहीं कितने पोथे लिख डाले ऋषियों ने परंतु सबसे ज्यादा प्रसिद्ध किताब महर्षि पतंजलि ने योग के बारे में लिखी है। उन्होंने सारे समाज को योग का सही प्रारूप प्रदान किया। महर्षि दयानंद सरस्वती जिन्होंने योग से सामाजिक बदलाव लाने की बात ही नहीं कही अपितु आर्य समाज की स्थापना की, विवेकानंद जी ने भी बताया कि आप योग के सहारे समाज में रहते हुए भी आत्मिक शांति की प्राप्ति कर सकते हैं, पुराने समय में हमारे पूर्वजों के खून में डीएनए की तरह था, योग। जब सूर्य देव पूर्व दिशा में उदय होकर अपने प्रकाश से परे आर्यव्रत को प्रकाशमान करते थे तभी हमारे यहाँ राजा-महाराजा, ऋषि-मुनि और आमजन सभी योग करते थे, ज्ञान की गंगा बहती थी मेरे देश में, समाज इतना आगे पहुँच गया कि मोक्ष के पथ पर कोई भी अग्रसर हो सकता था। इस कारण ही हमारा देश ज्ञान, ध्यान और योग का केन्द्र बन गया था और इसलिए पता नहीं कितने ही विदेशी आए और ज्ञान पुंज से अपने देश में कुछ ना कुछ ले ही गए। जिसके कारण आज हमें अपने भारतीय होने पर गर्व है।

लोगों के लिए योग चमत्कार की तरह है क्योंकि इससे ना जाने कितने लोगों की बड़ी से बड़ी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। मैंने कई डाक्टरों को भी योग मेडिटेशन करते सुना है। आज कल तो क्या डॉ., इंजीनियर और तो और देश के महान साईंटिस्ट भी योग को अपना चुके हैं। सारे दिन भर की थकान, तनाव और चिंताओं से भरी रातों का बस एक ही इलाज है, योग।

वैसे तो कहते है मन चंगा तो कठौती में गंगा, मगर दोस्तों दिल प्रसन्न होगा तभी तो चेहरे पर लाली आयेगी, नहीं तो चेहरे पर झुरियाँ होंगी, दिमाग में शांति का वास रहेगा तभी बाल काले रहेंगे। बस शुरूआत करनी पड़ेगी। योगाभ्यास ऐसा भी नहीं है कि हर रोज बाहर जाना जरूरी है, अगर एक बार आप आसनों के बारे में जान गए तो घर के आँगन या छत पर भी कर सकते हैं।

वज्र आसन तो इतना सरल है कि आप इसे खाना खाने के बाद भी कर सकते हैं। पानी खाना खाने के कम से कम आधा घंटे बाद पीएं थोड़े महीनों में आपको अंतर नजर आएगा। तोंद गायब, नया जोश और एक नए प्रकार की ऊर्जा महसूस करेंगे अपने जीवन में। बिना प्रोटीन, बिना महंगे जिम के ही हृष्ट-पुष्ट नजर आने लेंगे। योग केवल आम लोगों के लिए नहीं अपितु खिलाड़ियों को भी इसकी जरूरत है, खेलों में अगर आप हारी हुई बाजी जीतना चाहते हैं, आखिर के सैकेंडों में आपका प्रतिद्वंदी आपको हराना चाहता है, तो योग का सहारा लें, मेरा मानना है कि योग जोश के साथ होश भी देता है। हमारे शरीर को आत्मिक बल के साथ-2 दिमागी रूप से भी संतुलित रखता है। तो आप हर परिस्थिति में हावी रहेंगे चाहे तो प्रतिद्वंदी कैसा भी, कितना भी अनुभवी ही क्यों न हो। जीत आपकी ही होगी। इसमें आपको हौंसला देने की ताकत है। क्योंकि दबाव में हम अपने आत्मिक बल के कारण ही दूसरे को घुटने टेकने पर मजबूर कर सकते हैं। लोग कहते हैं कि मुझे ये नहीं दिया, कोई कहता है बस इतना ही दिया और कोई कहता है कि उसके भण्डार तो भरे हैं मालिक मेरा घर क्यों खाली छोड़ दिया। मैं यहाँ बात कर रहा हूँ आत्म संतुष्टि की, नकारात्मक वजहों में भी सकारात्मक सोच बनाने की। जैसे अगर भगवान ने धन नहीं दिया तो क्या हुआ आपको स्वस्थ शरीर तो दिया है। अगर आप आज कम पैसे कमा रहे हैं तो क्या हुआ मगर रात को बिना गोली खाये चैन की नींद तो आ रही है। हर जगह आप को नाकामी मिल रही है परंतु क्या पता कल आप के लिए नई कामयाबी लेकर आये। जरूरी ये है कि क्या बचा या क्या पाया ना कि क्या आपने गँवाया या आप क्या हासिल नहीं कर पाए। हर जगह शिकायत करने से बचें। ताकि वो भी आप को सिरियसली ले। कहा है ना किसी ने हँसते रहें हर हाल में क्योंकि रो तो जहान रहा है। तकदीर अपने आप बदल जाएगी बंदे पर आँखे तो न खो।

भगवान हर जगह है मुझमें राम तुझमें राम सबमें राम समाया किसको ढूँढे बंदे में तो तेरा ही साया। उसको ढूँढना है, तो अपने अंदर ढूँढो ना कि व्यर्थ के प्रपंचों में फँसों। सिम्पल-सा फण्डा है ध्यान लगाएं। धीरे-धीरे उस मन को जो बड़ा चंचल है उसे कंट्रोल करें। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती आप देखेंगे की आप को इसमें आनंद आने लगेगा। मोक्ष की तलाश में लोग हमारे देश में बरसों से भटकते रहें हैं। पर सोचो की क्या कभी हुआ होगा कि एक आम इंसान जो सामाजिक कार्य करते हुए, घर परिवार के साथ रहते-रहते भगवान से मिल ले। यही तो योग का कमाल है। बस जनाब जब ध्यान लगने लग जाएगा तो आप को कोई लक्ष्य निर्धारित करना होगा। प्रभु के चरणों में तो आजीवन निकालने पर भी जिस प्रकाश के दर्शन नहीं होते वो यहां नजर आयेगा असीम, अपार और अनंत प्रकाश यहीं तो है जो आप खोज रहे थे। इस प्रकाश से जैसा चाहे वैसा सुंदर सलोना किसी भी आकार का अपना इष्ट बनायें। ये ही तो योग की माया है अंतःकरण के पट खुल जाते हैं। जो नहीं समझ पाया वो वक्त से पहले लाचार, बूढ़ा और बेकार। अब फैसला आप के हाथ में है।

मैं आज युवाओं का आह्वान करना चाहूंगा कि आगे बढ़ें और अपने देश की परम्परा को आगे बढ़ाएं और योग को हर घर में पहुँचाएं। ये हमारा कर्तव्य ही है कि हमारे बच्चों को इस वरदान से दूर ना करें बल्कि उन वेदों में छुपे हुए राज को बताएं कि कैसे बाहर के लोगों ने हमारे उस राज को जान कर ही तो वो अपार संतोष पाया है, हमारी जड़ी बूटियाँ के राज को उन्होंने अपनी दवाईयों में बदल दिया और आज कहाँ पहुँच गये। हम तो बस जात-पात, ऊँच-नीच से कभी आगे नहीं बढ़ पाये। पर अब नहीं अब सरकार ने भी योग दिवस बनाने का प्रण किया है और ये अब पूरे संसार में पर्व की तरह बनाया जा रहा है। अब ये जन आंदोलन बनना चाहिए। स्कूल, कॉलेजों में तो अनिवार्य हो जाना चाहिए, योग। क्योंकि देश आज नये कल की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है और इसमें योग हम भारतीयों को नई उर्जा प्रदान करेगा। क्योंकि अभी नहीं बदला तो कभी नहीं बदलेगा ये भारत और फिर से इसे योग, ध्यान का केंद्र बनाते हैं।

विजय कुमार गल्हाण
तकनीकी सहायक ग्रेड-II
सी.एम.यू.-I

राजभाषा गतिविधियां (अक्टूबर, 2022 से मार्च, 2023)

- ❖ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2022-23 की दूसरी छमाही बैठक श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वापकोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 23.12.2022 को प्रातः 11.00 बजे गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में आयोजित की गई।
- ❖ दिनांक 08.12.2022 को वापकोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिन्दी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में बताया।
- ❖ दिनांक 08.12.2022 को जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वापकोस के गुरुग्राम कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- ❖ दिनांक 24.12.2022 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वापकोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।
- ❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 14.11.2022 को वापकोस के रायपुर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- ❖ वापकोस के रायपुर कार्यालय में दिनांक 14.11.2022 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिन्दी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के निदेशक (रा.भा.) द्वारा कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी गई तथा वाइस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया गया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी भी दी और राजभाषाई निरीक्षण भी किया गया।
- ❖ राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 13.11.2022 को वापकोस के रायपुर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- ❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 18.10.2022 को वापकोस के अहमदाबाद कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। उक्त निरीक्षण का समन्वय कार्य वापकोस को सौंपा गया था जिसकी समिति सदस्यों द्वारा सराहना भी की गई।

- ❖ राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) द्वारा दिनांक 29.10.2022 को वाष्कोस के चण्डीगढ़ और पंचकुला कार्यालयों के राजभाषाई निरीक्षण किये गए।
- ❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 05.01.2023 को वाष्कोस के चण्डीगढ़ कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण दिल्ली के विज्ञान भवन में किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम का समन्वय कार्य वाष्कोस को सौंपा गया था जिसकी समिति सदस्यों द्वारा सराहना भी की गई।
- ❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 18.01.2023 को वाष्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण मुम्बई में किया गया।
- ❖ जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा वाष्कोस के जयपुर कार्यालय का दिनांक 25.01.2023 को राजभाषाई निरीक्षण किया गया।
- ❖ वाष्कोस के जयपुर कार्यालय में दिनांक 27.01.2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय के श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.) द्वारा कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा वायस टाइपिंग का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2022-23 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में जानकारी भी दी।
- ❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 27.02.2023 को वाष्कोस के जयपुर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण जोधपुर में किया गया।
- ❖ दिनांक 30.03.2023 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में वाष्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।
- ❖ दिनांक 30.03.2023 को वाष्कोस में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में विभिन्न प्रभागों से कार्मिकों ने भाग लिया।

भारत की राजभाषा से विश्व भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है: हिन्दी

साभार : राजभाषा भारती

प्राचीन काल से हमारी भारतीय भाषा, कला-संस्कृति और परंपराएं अन्य देशों से समृद्ध रही है। अन्य परंपराओं की तरह यहां 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की एक धारणा प्रसिद्ध है। इसमें संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानकर सभी के प्रति आदर भाव रखने का प्रयास दिखता है। इसी प्रयास में किसी देश के लोगों की भाषा, संस्कृति का समन्वय आदि का एक अहम योगदान रहता है। यही तत्व लोगों को एकत्रित करते हुए उन्हें जोड़ने का काम करते हैं। इस क्रिया में भाषा की सर्वश्रेष्ठ भूमिका रही है। क्योंकि भाषा हमेशा से समन्वय करने का एक प्रमुख व सार्थक माध्यम रहा है।

प्रत्येक देश की अपनी एक मूल भाषा होती है जिसे उस देश के अधिकतर लोग अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाते हैं। उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। राष्ट्रभाषा किसी देश की शान और पहचान होती है। हमारे देश में वही भूमिका हिंदी भाषा निभा रही है, परंतु दुःख की बात है कि हिंदी को आज तक राष्ट्रभाषा बनने का गौरव नहीं हो सका। भारत में हिंदी अनेक रूपों में प्रचलित है। यहाँ के अधिकांश लोग इसे मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा व कहीं कहीं तो लोग इसे राष्ट्रभाषा तक मानते हैं। इतना होने पर भी हिंदी आज अपने देश के सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व का प्रतिनिधित्व करते हुए संपूर्ण विश्व में फैलती जा रही है। देश-विदेश में इसे समझने व प्रयोग करने वालों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी समझ चुके थे कि देश के विकास और उत्थान में हिंदी भाषा ही मुख्य भूमिका अदा कर सकती है। शायद इसीलिए उन्होंने देश की स्वाधीनता से तीन दशक पहले ही हिंदी के उत्थान के लिए काम करना शुरू कर दिया था। उनका कहना था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता, हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है। परंतु स्वाधीनता के 75 वें साल बाद भी हिंदी प्रेमियों, भारतवर्ष के अनेक स्वतंत्रता सेनानी जो हिंदी को आजीवन राष्ट्रभाषा बनाने का सपना देखते रहे उनके सपने आज भी पूरे नहीं हुए। भारत में हिंदी को अपने ही लोगों द्वारा किस तरह अनदेखा किया गया तथा सभी भारतीयों की आंखों में धूल झोंककर कैसे सिर्फ इसे राजभाषा बनाकर छोड़ दिया गया। इसके विपरीत हिंदी अपनी सरलता व सरसता से किस प्रकार आज विश्व के कोने-कोने में पहुंचकर विश्व भाषा बनने की कगार पर खड़ी है यही इस शोध पत्र का सार है।

बीज शब्द: हिंदी, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, विश्व भाषा ऐतिहासिकता, चुनौतियाँ आदि।

शोध का लक्ष्य: हमारे देश की सबसे प्रमुख भाषा हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए भारत एवं विश्व में इसकी वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालना है। इसके साथ-साथ हिंदी का भविष्य, राष्ट्रभाषा के तौर पर इसकी चुनौतियों को स्वीकार कर उसका समाधान निकालने की परिकल्पना करना ही इस शोधपत्र का उद्देश्य रहेगा।

शोध पद्धति: इस पत्रिका के निर्माण में शोध की वर्णनात्मक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक आदि विधियों का सहारा लिया गया है। इनके माध्यम से हिंदी भाषा की वर्तमान परिस्थिति पर ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए इसका तुलनात्मक अध्ययन कर इसकी राह में आने वाली सभी बाधाओं का समाधान प्रस्तुत कर इसके सुनहरे भविष्य की परिकल्पना की जाएगी।

हिंदी भाषा की ऐतिहासिकता व स्वरूप:

भारत में हिंदी भाषा का इतिहास लगभग हजार वर्ष पुराना है संस्कृत भाषा से जन्मी हिंदी में आज लगभग अधिकतर शब्द संस्कृत की ही देन हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि हिंदी संस्कृत की वास्तविक उत्तराधिकारिणी भाषा है। संस्कृत, पालि प्राकृत और अपभ्रंश से सफर कर हिंदी आज आधुनिक आर्यभाषा की मर्यादा को प्राप्त कर चुकी है।

अनेक भाषाविदों के अनुसार 'हिंदी' शब्द 'सिंधु' से बना है, प्रारंभ में सिंधु नदी के आसपास रहने वाले को 'सिंधु' कहा जाता था और इनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को 'सिंधी' लेकिन यही शब्द विदेशी ईरानियों के जुबान पर आकर पहले 'हिंद' और बाद में 'हिंदी' में परिवर्तित हो गया। क्योंकि वे 'स' का उच्चारण 'ह' और 'ध' का उच्चारण 'द' के तौर पर करते थे। उसी हिंदी भाषा की आज कई उपभाषाएं व बोलियां विकसित हो चुकी हैं। जिसमें मुख्यतः— पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, बिहारी हिंदी, राजस्थानी हिंदी और पहाड़ी हिंदी आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त इन उपभाषाओं की अनेक बोलियां भी आज प्रचलित हैं।

मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए हमेशा से भाषा को एक श्रेष्ठ माध्यम मानता आया है। भाषा बोलने व समझने की प्रक्रिया ही मनुष्य को पशुओं से अलग करती है। इसलिए मानव के जीवन में भाषा की आवश्यकता कल्पनातीत है। भारतवर्ष की प्रधान भाषा है हिंदी। लगभग 68% भारतीय हिंदी भाषा बोलने व समझने में आज सक्षम हैं। इसलिए आज भारत का प्रत्येक बच्चा अपनी प्रांतीय भाषाओं के अतिरिक्त, बचपन से ही हिंदी भाषा को सीखने व समझने का एक उपयोगी माहौल पाता है। जिससे इसे अपनी दूसरी मातृभाषा के रूप में स्वीकार करने में उन्हें कोई समस्या नहीं आती।

राजभाषा के रूप में हिंदी:

किसी भाषा की शक्ति का अंदाजा उस भाषा के प्रयोगकर्ताओं की संख्या से लगाया जा सकता है। किसी भाषा को समृद्ध उसको प्रयोग करने वाले ही करते हैं। हमारे देश में अनेक भाषाएं प्रचलित होने पर भी हिंदी भाषा को जितना प्यार और दुलार मिला है, वह महत्वपूर्ण है। आज भारत के लगभग 60% लोग इस भाषा का दैनिक क्रियाकलापों में व्यवहार करते हैं। इनमें लगभग 49% लोगों की हिंदी मुख्य भाषा है। इससे हिंदी की लोकप्रियता एवं इसकी शक्ति व प्रयोजन को भली-भाँति समझा जा सकता है। अतः आज यह कहना गलत न होगा कि आज हर दूसरे भारतीय की मुख्य भाषा है - हिंदी।

हिंदी विश्व परिदृश्य में:

एक तरफ जहां आजादी के बाद भारतवर्ष में राजनेताओं ने हिंदी को हेय दृष्टि से देखना शुरू किया वहीं दूसरी ओर अपनी सरलता व सरसता के कारण हिंदी धीरे-धीरे फैलती चली गई। 2011 की जनगणना के मुताबिक देश में 43.63 प्रतिशत आबादी की पहली भाषा हिंदी है। यह आंकड़ा करीब 11 साल पहले का है। तब देश में 125 करोड़ लोगों में से 53 करोड़ लोग अपनी मातृ भाषा हिंदी ही मानते थे।

भारत हमेशा से अपने ज्ञान, भाषा, कला संस्कृति आदि के लिए सभी देशों में आकर्षण का केंद्र रहा है। यह देश प्राचीन काल से अनेक विद्वानों का गढ़ रहा है। इस देश ने प्राचीन काल से ही अपने ज्ञान, आर्युवेद व योग के आधार पर विदेशी विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। आज वैश्वीकरण का युग है। इस युग में कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह बहुत आसानी से भेजी जा सकती है। आज हमारे युवा उच्च शिक्षा व नौकरी के लिए विदेशों में अधिक मात्रा में गमन करने लगे हैं। हालांकि, बिना विद्वता के यह काम कतई आसान नहीं है, परंतु उनकी विद्वता में उनकी भाषा द्वारा प्राप्त ज्ञान का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार आज संसार में भाषाओं और बोलियों की संख्या लगभग 6800 से अधिक है। इनमें कुछ प्रमुख भाषाएं लगभग संसार की आधी या उससे भी अधिक जनसंख्या बोलती हैं। इनमें तीसरा स्थान हमारी राजभाषा हिंदी का भी है। संयुक्त राष्ट्र संघ के 193 सदस्य राष्ट्रों में भारत भी शामिल है। अंतर्राष्ट्रीय संगठन होने के कारण इसके द्वारा दिए गए दिशा निर्देश सभी देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं। इस संगठन की कामकाजी भाषाओं में अरबी, चीनी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, रूसी और स्पेनिश आदि प्रमुख हैं। यह वह भाषाएं हैं जिन्हें विश्व भाषा का गौरव प्राप्त है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने हिंदी भाषा के प्रति भी हमेशा अपनी सहानुभूति व्यक्त की है। संगठन के अधिकांश सदस्यों का हमेशा से यह मानना रहा है कि हिंदी में विश्व भाषा बनने का सम्पूर्ण सामर्थ्य व्याप्त है। उनका मानना है कि भारत सरकार अगर हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए खर्च उठाने को तैयार है तब हम हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रमुख भाषाओं में शामिल कर सकते हैं। इसकी पहल सर्वप्रथम 1977 में अटल बिहारी वाजपेयी जी ने विदेश मंत्री तथा 2002 में प्रधानमंत्री के तौर पर यहाँ हिंदी में भाषण देकर की थी। इसी प्रयास से 2018 के अगस्त में संयुक्त राष्ट्र ने हिंदी भाषा के एक साप्ताहिक समाचार बुलेटिन की शुरुआत की है। इसके बाद से संयुक्त राष्ट्र अपने सभी कार्यक्रमों का अपने रेडियो व वेबसाईट पर हिंदी भाषा में प्रसारण करता आया है।

भारत के प्रतिनिधि राजदूत टी.एस. तिरुमूर्ति ने बताया कि “इस साल पहली बार इस संगठन के प्रस्ताव में हिंदी भाषा को भी शामिल किया गया है, जिसमें बांग्ला और उर्दू का भी जिक्र है। हम इन बदलाव का स्वागत करते हैं।” उन्होंने कहा:- “भारत 2018 से संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग (DGC) के साथ साझेदारी कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के समाचार और मल्टीमीडिया कंटेंट को हिंदी भाषा में प्रसारित करने और मुख्य बनाने के लिए फंड भी दे रहा है।”

विश्व हिंदी सम्मेलन: यह सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है। यहां विश्व के कोने- कोने से हिंदी विद्वान, भाषा विज्ञानी, पत्रकार, साहित्यकार, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी इकट्ठा होते हैं। इस सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करते हुए, पाठकों में हिंदी साहित्य के प्रति रूचि पैदा करना तथा जीवन की विविध परिस्थितियों में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहन देना और साथ ही साथ हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों में भावुकतापूर्ण रिश्ता कायम करने के उद्देश्य से 1975 में यह विश्व हिंदी सम्मेलन की श्रृंखला आरम्भ की गयी। इसकी पहल तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने की थी।

पहला विश्व हिंदी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में सम्पन्न हुआ जिसमें स्वतन्त्रता सेनानी विनोबा भावे ने अपना सन्देश दिया था। पहले इसका आयोजन हर चौथे वर्ष में होता था, लेकिन अब 3 वर्ष के अंतराल में होता है। अब तक इसके 11 सम्मेलन हो चुके हैं – मॉरीशस, नई दिल्ली, पुनः मॉरीशस, त्रिनिडाड व टोबेगो, लन्दन, सूरीनाम, न्यूयार्क और जोहांसबर्ग, भोपाल, मॉरीशस में संपन्न हो चुका है।

विश्व हिंदी दिवस: भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए 2006 में प्रति वर्ष 10 जनवरी को हिंदी दिवस मनाने की घोषणा की थी। यह विश्व हिंदी दिवस दुनियाभर के सभी भारतीय दूतावास एक त्यौहार की तरह मनाते हैं। विश्व हिंदी दिवस नॉर्वे में भारतीय दूतावास ने मनाया और बाद में दूसरा व तीसरा विश्व हिंदी दिवस भारतीय नॉर्वे की सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के तत्वावधान में सुरेश चन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में मनाया गया।

1. आज विश्व में करीब 70 करोड़ हिंदी भाषी लोग हैं। यह विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। वर्तमान मॉरीशस में लगभग 6,85,170, सिंगापुर में 5,000, दक्षिण अफ्रीका में 8,90,292, अमेरिका में 8,63,077, युगांडा में 1,47,000, यमन में 2,32,760, नेपाल में 8 लाख और जर्मनी में 30,000 लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। न्यूजीलैंड में आज हिंदी सर्वाधिक बोली जाने वाली चौथी भाषा बनी है।
2. आज लगभग 175 से भी अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का ज्ञान दिया जा रहा है। साथ ही साथ ज्ञान-विज्ञान, कला संस्कृति की अनेक पुस्तकें भी अब बड़े- पैमाने में हिंदी में अनूदित की जा रही हैं।

3. आज इंटरनेट पर हिंदी की मांग बढ़ी है। अनेक वेबसाइट सोशल मीडिया आदि में हिंदी का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है।
4. आज हिंदी जानने, समझने तथा बोलने वालों की संख्या में काफी तेजी आयी है जिसके कारण आज विश्व भर की प्रायः सभी वेबसाइटों पर हिंदी को लेकर एक रूचि पैदा हुई है। आज इसलिए इंटरनेट, ई-मेल, ई-कॉमर्स, ई-बुक एवं वेबसाइटों पर हिंदी बड़ी सहजता से उपलब्ध है। यहाँ तक की गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, इंटेल, एपल, आईबीएम जैसी कंपनियां भी अपने व्यापक बाजार के विज्ञापन के लिए आज हिंदी का सहारा लेते हुए साफ-साफ देखे जा सकते हैं।
5. विश्व आर्थिक मंच ने दिसम्बर 2016 में विश्व की 10 सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की एक सूची जारी की जिसमें हिंदी को भी जगह दी गयी थी। दूसरी ओर 'कोर लैंग्वेज' एक अंतर्राष्ट्रीय साइट ने 'दस सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषाओं में हिंदी को स्थान दिया था।'

हिंदी भाषा की उपयोगिता:

आज हिंदी का महत्व हमारे देश के साथ-साथ संपूर्ण विश्व में भी खूब बढ़ा है। हिंदी का प्रयोग आज विविध प्रकार के ज्ञान, व्यापार, तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी के अनेक क्षेत्रों में भरपूर हो रहा है। अब भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा देना हिंदी में देने तक की पहल हो चुकी है। जीविका के लिए आज हिंदी भाषा का क्षेत्र विस्तृत नजर आता है। कला के विविध क्षेत्रों में जैसे शिक्षक व प्रोफेसर बनना, पुस्तक लिखना, अनुवाद करना, प्रूफ रीडिंग करना, स्क्रिप्ट लिखना, संवाद लिखना, कांटेंट बनाना साथ ही साथ हिंदी में डबिंग करना आदि जैसे अनेक काम आज हम हिंदी भाषा के माध्यम से कर सकते हैं। सच कहें तो हिंदी ने हमारे लिए आज रोजगार के जितने रास्ते खोले हैं वह कोई अन्य विषय नहीं खोल सकता।

वर्तमान समय में हिंदी भाषा न केवल बोलचाल की भाषा तक ही सीमित है बल्कि यह आज संपूर्ण भारत की पहचान बन चुकी है। यह भाषा आज हमारी कला संस्कृति एवं संस्कारों व सभ्यता की सच्ची संवाहक, संप्रेषक है। यह वह भाषा है जो हमारे प्राचीन परंपरागत ज्ञान व सभ्यता के साथ आधुनिक विज्ञान व प्रयुक्ति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भाषा हमेशा से भारतीयों के लिए जन आंदोलन की भाषा रही। इस भाषा के माध्यम से ही राष्ट्रीय आंदोलन में सभी भारतवासी समीप आकर इकट्ठा हुए और विदेशी सत्ता से लड़कर देश को आजादी दिलाने का काम किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह भाषा सभी को एकता के सूत्र में बांधने का काम करती है। इसी संदर्भ में हमारे गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर जी कहते हैं कि “भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिंदी महानदी।”

निष्कर्ष :

आज वैश्वीकरण का दौर है। हिंदी अपनी सरलता से सभी की प्रिय बनकर आज विश्व की एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। यह भाषा बहुत ही सरल सहज होने के साथ-साथ विश्व की सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक भाषाओं में एक है। इसलिए इसे बोलने और समझने वालों की संख्या आज क्रमशः बढ़ती जा रही है। देश का प्रत्येक क्षेत्र जैसे ज्ञान-विज्ञान, व्यापार कला, संस्कृति, शिक्षा आदि सभी में आज हिंदी अपना अतुलनीय योगदान दे रही है। इसकी सरलता ही वह विशेषता है जो अन्य भाषा के लोगों को भी आसानी से अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है। इतना होने पर भी हिंदी आज भी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं बन पा रही। इसके लिए केवल हमारे नेताओं को हिंदी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाते हुए अपने कर्तव्यों का निष्ठा के साथ पालन करना होगा। हमारे देश में एक कथन प्रसिद्ध है कि यहाँ चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी' अर्थात् इस देश की गरिमा इतनी बड़ी है कि यहाँ चार कोस चलते ही लोगों के पीने का पानी अपना स्वरूप बदल लेता है और आठ कोस चलते ही उसकी बोली बदल जाती है। यह हिंदी भाषा के प्रति लोगों का स्नेह ही है जो इसे मातृभाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा व कहीं-कहीं तो लोग इसे राष्ट्र भाषा तक मानते हैं।

एक भाषा की शक्ति उसके प्रयोगकर्ताओं पर निर्भर करती है, जितने इसके प्रयोग करने वाले होंगे उतनी ही विकसित तथा समृद्ध होगी। हिंदी आज विश्व भाषा के रूप में प्रचलित है किंतु दुःख की बात यह है कि हमारे देश में हिंदी को अंग्रेजी भाषा के समक्ष हेय की दृष्टि से देखा जाता है। हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए सरकार के साथ-साथ हम भारतवासियों को भी विशेष प्रयत्न करने पड़ेंगे। इसके लिए सबसे पहले हमें दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करने होंगे। छोटे-छोटे प्रयास जैसे हिंदी का अध्ययन करना, लिखने का प्रयास करना, शुद्ध बोलने का प्रयास करना, हिंदी में हस्ताक्षर करना, कान्टेंट लिखना तथा अनुवाद करना आदि कार्यों से भी हम हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए खड़ा कर सकते हैं।

नहीं कहना भी एक कला है

साभार : तनाव को करें बॉय-बॉय

तनाव का प्रबंधन करना तब आसान हो जाता है जब आप नहीं कहना सीख जाते हैं। यह बाद में होने वाले बहुत से पश्चाताप और दिमागी तनाव से बचा सकता है। हमें नहीं स्वीकार करने की आदत भी विकसित करनी होगी, जब भी जब दूसरे इसे बड़े शहर और हल्के ढंग से कहते हैं, हम में से हर कोई कुछ निर्धारित सीमित संख्या तक ही कार्य कर सकते हैं और यह तथ्य हमेशा याद रखना चाहिए। इसी तरह हमारे ऊपर के या नीचे के लोग, जिनके साथ हम व्यवहार करते हैं, सीमित क्षमता रखते हैं। अगर हमने तनाव को कम करना है, हमें यह तथ्य तब जरूर ध्यान में रखना चाहिए जब हम कोई कार्य किसी के जिम्मे लगाते हैं या खुद कोई कार्य करने का जिम्मा लेते हैं। यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए कि हम तब तनावग्रस्त हो जाते हैं जब वह व्यक्ति, जिसे हमने कार्य सौंपा था, दिया गया कार्य नहीं कर सके, जिन की सहमति उन्होंने दी थी या हम दूसरों को कार्य नहीं कर के दे पाते, जिसका जिम्मा लिया था। जीवन में तनाव को कम करने के लिए थोड़ी समय सीमा अपनी ओर से जुड़िए और सौंपा गया कार्य देने से पहले खुद समय का हिसाब जरूर करें यह सिर्फ सामान्य ज्ञान की बात है बुद्धिमत्ता से इस समय सीमा को जगाते रहें और एक बार जब आप वायदा ले या दे चुके हैं तो इसे भूलिए मत।

स्पष्टवादिता शुरू में पीड़ा देती है, बाद की आयु में यह आपकी ख्याति बनाने में मदद करती है- यह आपके और दूसरों के तनाव को कम करती है। किस बात की 180 दिन कोशिश कीजिए। हां अगर जरूरत पड़े तो इस प्रक्रिया को बीच में ही ठीक कर लें।

अभिव्यक्ति का अलग अंदाज़

झिझकते हैं, मेरे शब्द बोलने में,
लेकिन झिझकती नहीं, मेरी कलम लिखने में,
क्योंकि मेरा अंदाज़ अलग है।
घबराती हैं मेरी आंखें, लोग भरे समूहों में,
लेकिन घबराती नहीं मेरी सोच, नये सितारे चमकाने में,
क्योंकि मेरा अंदाज़ अलग है।
कांप जाते हैं मेरे पैर, मंच की विद्वान विराजित हवाओं से,
लेकिन कांपते नहीं मेरे अक्षर, भावों को लिखने से,
क्योंकि मेरा अंदाज़ अलग है।
तरंगों, सी विचार धारा बहती प्रवाह भाव है,
बातों में नहीं बल्कि कविताओं में परिवर्तित होते हैं,
क्योंकि मेरा अंदाज़ अलग है।
तितलियों की धीमी फड़फड़ाहट सी हलचल है सोच में,
सजते संवारते हैं शब्द, प्रकट होते हैं सुन्दर पंक्तियों में,
क्योंकि मेरा अंदाज़ अलग है।
श्वेत वर्ण के मन कागज़ पे, रंगे स्याही है भावनाएँ,
व्यक्त करना ही इरादा है, जोकि होठों से नहीं बल्कि कलम से,
क्योंकि मेरा अंदाज़ अलग है।

सी. एच. उदयश्री
डी.ई.ओ
हैदराबाद कार्यालय

परीक्षा – एक पहेली

अरे परीक्षा माँगू भिक्षा, सुन मेरी अरदासा।
आगे चाहे जैसा करना, अबकि कर दे पास।।
कई साल से इसी क्लास में, मेरा ब्रेक लगा है।
आगे इंजन चला हुआ है, नीचे जैक लगा है।।
व्रत भी करता, पूजा करता, मंदिर भी जाता हूँ।
जब से तेरा हुआ है दर्शन, एक समय ही खाता हूँ।।
मच्छर काटे, मक्खी काटे, तन से बहे पसीना।
तेरे कारण किया है हमने, अपना मरना जीना।।
कल्याणी कल्याण करो, फेंको ऐसा फंदा।
सभी परीक्षा पास करे, तेरा चंद्र प्रकाश बंदा।।

चन्द्र प्रकाश पाण्डेय
अभियंता (अवस्थापना)

कविता है मेरी सहेली

कविता है मेरी सहेली,
बचपन की याद दिलाती है।।

मां की थपकी और लोरी से मुझे सुलाती है,
जब भी मुझे याद आये वो पुराने दिन
कविता आज भी मुझे सहलाती है।।
मेरे हर दर्द, हर अनकही बातों को समझती है
जिन बातों को बयान नहीं कर सकती, उन्हें बयान करती हैं
कविता मेरी सहेली है।
कविता मेरी सहेली है।

मुझे बेटी से मां बनाती है,
जब भी बच्चे को सुलाना होता है
कविता मुझे सहारा देती है,
कविता के जरिये बेटी से, मां मिल जाती है
कविता मेरी सहेली है।
कविता मेरी सहेली है।

पल भर में मुझे हंसाती है
दूसरे ही पल रुलाती है
मुश्किल वक़्त पर सहारा देती है
जैसे कहती है - तुम नहीं तो, कौन कर सकता है!!
कविता मेरी सहेली है।
कविता मेरी सहेली है।

मनिदीपा भोमिक
डी.ई.ओ. ग्रेड.-II
कोलकाता कार्यालय

सेवानिवृत्त जीवन कैसे जिएं

साभार : रिटायरमेंट के बाद सुखी जीवन

जब आप अपनी नौकरी या किसी व्यवसाय में थे, तब अपने को श्रेष्ठ समझते थे। पद, धन, प्रतिष्ठा के गर्व में आदमी को आदमी नहीं समझते थे। जब वे अपने व्यवसाय से अलग हो जाते हैं तो इस धरती पर हारे हुए जुआरी की भाँति चलते-फिरते हैं। ऐसी स्थिति में वे अपने आपको असमर्थ, असहाय और अनुपयोगी समझने लगते हैं। यह सर्वथा गलत है।

जीवन जीना भी एक कला है। बुद्धिमान लोग जीवन ज्ञान और विवेक से बिताते हैं और मूर्ख लोग रो-रो कर जिंदगी के दिन पूरे करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में सुख और प्रसन्नता की तलाश कर रहा है; किन्तु यह हमारी मानसिक प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। विचार जीवन में सर्वोच्च होता है। हमारी सोच पर हमारा सुख-दुःख निर्भर करता है। यह तो आत्मा की सहज अनुभूति है। महाकवि शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है —

“कुछ भी भला या बुरा नहीं है, लेकिन चिंतन ऐसा बनाता है।” इसी बात को लिंकन ने एक बार कहा था, “अधिकांश लोग वैसे ही सुखी हैं जैसा कि वे दिमाग से सोचते हैं।”

सेवानिवृत्त लोग समझें कि सुख धन-दौलत और प्रतिष्ठा में ही नहीं है, बस यह तो मन का धन है। उन्हें साहस, शक्ति और विश्वास के साथ जीवन की चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना चाहिए। यहाँ कुछ नियम और सिद्धांत हैं, जिनके आधार पर हम अवकाश प्राप्त लोग अपने शेष जीवन को सुख, शांति और आत्मसम्मान के साथ बिता सकते हैं।

1. प्रेम और अनुराग

यह सुखी और प्रसन्न रहने का सीधा रास्ता है। लोग प्रेम प्राप्त करने के लिए धरती के छोर तक चले जाते हैं। प्रेम पाने की भावना एक मनोवैज्ञानिक जरूरत है, जो प्रत्येक मानव के हृदय में सदैव लहराती रहती है। यह जीवन का मधुर रहस्य है। यह ऐसी प्यास है जो कभी बुझती नहीं। अतः अवकाश प्राप्त लोगों को अपने बच्चों, पत्नी, भाई, बहनों और रिश्तेदारों से हार्दिक प्रेम करना चाहिए; क्योंकि देने में वही निहित है, जिसे हम पाना चाहते हैं। ऐसा करने से वे सभी के प्रेम-पात्र और श्रद्धाभाजन बन सकेंगे। बुढ़ापे का जीवन प्रेम की महकती हवा में खिल उठेगा।

2. चिंता और भय से मुक्त रहें

अवकाश प्राप्त लोगों को यह समझना अत्यावश्यक है कि भय और चिंता मानव जाति के सबसे बड़े शत्रु हैं, जो जीवन के सुख, आनंद और प्रसन्नता को नष्ट कर देते हैं। सुख आंतरिक संतोष से उत्पन्न होता है, चिंता मानव जीवन का विष है, दुर्भाग्य की जड़ है, हमारे दिमाग और शरीर की सारी व्यवस्था को नष्ट करने वाली शैतान की बेटी है। यह पेट के रोगों, दिल की धड़कन मांसपेशियों के दर्द के साथ अवसाद, तनाव और विषाद की जननी है। अतः अवकाश ग्रहण करने वालों के लिए यह आवश्यक है कि वे काल्पनिक भय और चिंता से मुक्त रहें। महान विद्वान वोक कहते हैं —

“चिंता और भय बिना जीवन से गुजरना महान सौंदर्य है। हमारा आधा भय आधारहीन और अपमानजनक है।”

भय तर्कसंगत गंभीर और मोक्षकारक है। चिंता से भय उत्पन्न होता है। समाज और ईश्वर का भय मनुष्य को सन्मार्ग पर ले जाता है, पाप से बचाता है प्रतिष्ठा को बरकरार रखता है। चाह से चिंता बढ़ती है, चाह के घटते ही मनुष्य चिंतारहित हो जाता है। रहीम ने कहा है-

**“चाह घटी चिंता मिटी मनुआ बे-परवाहा।
जिन को कछू न चाहिए वे नर शहंशाहा।”**

(भय और चिंता मुक्त होना ही अमोघ मंत्र है।) क्योंकि सेवानिवृत्त लोग जीवन जी चुके हैं और जो अब समाप्त होने की राह पर हैं, फिर चिंता कैसी भविष्य में अनिष्ट की आशंका अर्थहीन है।

3. विश्राम और मनोरंजन

इस संघर्षपूर्ण संसार में सेवानिवृत्त लोगों को स्वस्थ और सुखी रहने के लिए सदैव सतर्क रहना आवश्यक है, क्योंकि उन्हें अपने ही घर में अकेले, दुःखी, अभागे, अनदेखे और अनसुने होकर ही जीना है। वृद्ध लोग उदास, ऊबे और थके हुए-से होते हैं। उन्हें विश्राम और मनोरंजन की आवश्यकता होती है। यह ठीक है कि अब वे अपने काम और परिश्रम से मुक्त हैं, फिर भी अकेले मन को बहलाने की सख्त जरूरत होती है। जैसा कि विद्वान् सर्वेटीज ने कहा था, "विश्राम भूखे का भोजन, प्यासे का पानी, शीत के लिए गरम और गरम के लिए शीत होता है।" यह एक मधुर रसायन, जो शिथिल शिराओं और धमनियों को संजीवित रखता है। यह ऐसा मरहम है, जो दिमाग को शांति और आनंद प्रदान करके पुनः स्थापित कर देता है और नवीन स्फूर्ति से भर देता है। विश्राम के बारे में महान् सम्राट् नेपोलियन ने कहा था- "कितना आनंददायक है विश्राम! बिस्तर मेरे लिए विश्राम का स्थान है। मैं इसे संसार के सारे सिंहासनो के लिए नहीं बदलूंगा।" वास्तव में थके हुए वृद्ध अवकाश प्राप्त लोगों को इस संजीवनी की अति आवश्यकता है, जिसके लिए निम्न साधन उपयोगी हैं-

- **खेलकूद में रुचि लेना**-आनंद जीवन का मुख्य उद्देश्य है। समस्त प्राणी आनंद में ही जीते हैं। अतः वृद्ध लोग भी खेल-कूद में रुचि लेकर आनंद प्राप्त कर जीवन को सुखी बनाएँ।
- मानसिक कार्य करनेवाले बैडमिंटन, टेनिस, शतरंज, कैरम आदि खेलों में रुचि लें, जो उनकी उदासी और अकेलापन दूर करने में सहायक होंगे।
- धन कमाने की लालसा का त्याग कर विश्राम करना, आनंदपूर्वक जीवन बिताना जरूरी है।
- अभिरूचि की नई-नई पुस्तकें पढ़ना।
- संगीत और नृत्य में भाग लेना, दूरदर्शन में रुचि लेना तथा किसी सिनेमाघर में जाना।
- तीर्थधाम और ऐतिहासिक स्थानों के दर्शन करने जाना। यह पर्यटन सुखदायक और मनोरंजक होगा। देव-मंदिरों में दर्शन, पवित्र नदियों में स्नान, मन की शांति और धर्म में आस्था जगाने में सहायक होंगे। ऐतिहासिक स्थलों से अतीत की सभ्यता और संस्कृति का बोध होगा। यह मन-बहलाव का सुखद साधन है। पिकनिक के लिए अपने इष्ट मित्रों के साथ जाना आनंदप्रद होता है।

4. नवयुवकों के साथ रहना

सेवानिवृत्त लोगों को नवयुवकों के साथ रहना अच्छा रहता है, क्योंकि उनके साथ रहने से वृद्ध लोग अपने को युवा महसूस कर सकते हैं। नौजवान कभी निराशा, कुंठा, भय और मृत्यु, दुर्भाग्य और मुसीबतों की चिंता नहीं करते। हम देखते हैं कि वे सदैव सुख, स्वास्थ्य, आशा, उल्लास और आनंद के बारे में सोचते हैं; किन्तु वृद्ध लोग केवल क्षय और मृत्यु, दुर्भाग्य और मुसीबतों की कल्पना में जीते हैं। यशोधर का शरीर सूख गया, अकेले कमरे में सर्द बिस्तर पर पड़े रहते हैं। नींद नहीं आती, बस करवटे

बदलते रहते हैं। न जाने कितने वर्षों से मौत दरवाजे पर दस्तक दे रही है, किन्तु आती नहीं। मौत को बुलाने की प्रार्थना करते हैं दुनिया के मालिक से। किन्तु दूसरी और सुबोध चटर्जी हैं कि अवकाश-प्राप्त करने के बाद नौजवानों में घुल-मिलकर ज़िंदगी की मौज-मस्ती और आशा की हरी-भरी वादियों में गुन-गुनगुनाते रह रहे हैं। वे कभी नहीं सोचते —

**“उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए।”**

ज़िंदगी की शाम निराश मन की कल्पना है। वृद्धों की हताशा। जवानी — उल्लास की तरंग है, मन की मनोहर लहर। महाचिन्तक रिजले ठीक ही कहते हैं —

“जवानी जीवन का आनंदमय और सुहावना वसंत है, जब आनंद उत्तेजक होकर रक्त में नाचने लगता है, तब प्रकृति अपने सामान्य उत्सव में भाग लेने के लिए पुकारती है।”

यह सत्य है कि जवानी जीवन की एक आश्चर्यजनक अवस्था है। यह वसंत का मौसम है, प्यार का मौसम है। खुशनुमा, बहारों से लबरेज़ शक्तिमय, स्फूर्तिमय।

उस दिन सुबह का वक्त था। मैं अतीत के कष्टों और मुसीबतों की याद में खोया-खोया बैठा था। उदास और उद्विग्न भविष्य में आनेवाली काल्पनिक व्यथाओं और चिंताओं में डूबा हुआ, गुमसुम, भावहीन। इसी बीच मेरा सोलह वर्षीय नाती अमित मुसकराता हुआ आया-‘बाबा’ उठो। यह सुनकर मैं सँभल गया। उठा और उसके साथ चल दिया एक सुहावने पार्क में सूरज कलियों को चूम रहा था। फूलों की मंद सुगंध को अपने आँचल में बसाए हवा बह रही थी, चिड़ियाँ गा रही थीं आनंद के गीत। मैं उस सुखद वातावरण में प्रसन्न था, भूल गया अपनी सारी व्यथाओं को। नौजवानों के खेल-कूद और उनके चहकते स्वर में। उस दिन से नित्य पार्क में जाने लगा, नौजवानों की क्रीड़ाओं में रुचि लेने लगा। मेरे नीरस जीवन में आनंद का रस उमड़ने लगा। इस तरह युवक हमारे बूढ़े शरीर में जीने की साध जगा देते हैं और हम अपनी बूढ़ी आदतों एवं यादों को भुला देते हैं।

बच्चों के साथ खेलें

बच्चे नन्हें फरिश्ते हैं- भोले, प्यारे और पवित्र-परिवार के खिलौने हैं। उनके कोमल चेहरे की मुसकान, नन्हें होंठों की मधुर बोली। उनकी किलकारियाँ, नाचना-कूदना घर को स्वर्ग बना देती है। यह देखा गया है कि नाती और नातिन बूढ़े बाबा, दादी से अधिक लगाव रखते हैं। बशर्ते कि उनकी माँ ने उन्हें गुमराह न किया हो। उनके साथ रहने से बूढ़ी ज़िंदगी में ताजगी, प्रसन्नता और उत्साह का सैलाब - सा आ जाता है। बच्चों के साथ खेलने, टहलने और गाने नाचने से वृद्ध लोगों को - बच्चे होने का एहसास होता है।

मेरी नातिन शुभी सुंदर, चंचल और फूल-सी मोहक, मंद पवन-सी मेरे पास आती है और अपनी नाजुक बाँहें मेरे गले में डालकर मीठी-मीठी बातें करने लगती है, झलती और गाती है, नाचती हैं, थिरकती और किलकती हैं; आँख-मिचौली खेलती है। ‘बाबा’ मुझे ढूँढो, कहकर छिप जाती है। दौड़ती है तो मुझे उसके साथ दौड़ना भी पड़ता है। गुड्डे-गुड़ियाँ, तरह-तरह के खिलौने, लाल-पीले गुब्बारे दिखाकर प्रसन्नता से खिल उठती है। मैं उसकी बाल-सुलभ क्रीड़ाओं को देखकर अपने बुढ़ापे को भूल जाता हूँ। वास्तव में बच्चों की संगति में पत्रहीन नीरस वृक्ष पल्लवित व पुष्पित होने लगता है और नया व ताजा जीवन रक्त सेवानिवृत्त लोगों की सूखी शिराओं में बहने लगता है।

प्रकृति से निकट संबंध रखें

महापुरुष सोमलैट ने कहा था- "प्रकृति के एकांत स्थानों, पहाड़ों, घाटियों, चरागाहों, नदी की छोटी धाराओं, झाड़ियों या किसी झोंपड़ी में जहाँ सुंदर व शांत चिड़ियाँ छोटा सा मधुर गीत शाम-सवेरे गाती हैं वहीं स्वास्थ्य, शांति और चिंतन निवास करता है।" निश्चय ही प्रकृति की मनोरम छटा दिमाग में स्फूर्ति और ताजगी भर देती है। सेवानिवृत्त लोगों को प्रकृति से संबंध रखना जरूरी है। वह समस्त प्राणियों की माँ है, दयावान् और अनुशासन प्रिया।

यदि हम उसकी इच्छानुसार कार्य करते हैं तो वह हमें सुखी रखती है और हम उसके विरुद्ध हो जाते हैं तो वह दंड देती है, क्षमा करना नहीं जानती। वह पैदा करती और पालती है, सुरक्षा करती है और अपने ही हाथों से नष्ट कर देती है। वह हमें सिखाती है, प्यार करती है, प्रसन्न और आनंदित करती है- अपने सौंदर्य से अपनी कृपा से। वह सदा नवीन है, सदाबहार है। उस पर सदैव यौवन से पूर्ण मौसम आते हैं अपनी बहारों और रंग लेकर। वसंत जवानी का मौसम है, मुहब्बत का मौसम। सर्दी शांति का और सुकून का मौसम और वर्षा दया का मौसम है।

जब व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय में अवकाश ग्रहण करता है तो फिर वह काम नहीं कर सकता है। तब उसे अकेलेपन और मौत की भावना से अलग रहने के लिए प्रकृति की गोद में जाना सुखप्रद होगा। उसके लिए उसे गांव की ओर पहाड़ों और प्रकृति के मनमोहक स्थलों की ओर जाना उपयुक्त रहेगा; क्योंकि खुले वातावरण में, शुद्ध वायु में वह स्वस्थ रह सकेगा। खेतों में हरी-भरी लहलहाती फसलें, बागों में मुसकराते हुए फूलों-फलों से लदे वृक्ष; थके हुए उसके दिल और दिमाग को चिंताओं व व्यथाओं से मुक्त कर देंगे। शहर के प्रदूषित वातावरण को छोड़कर सेवानिवृत्त लोगों को प्रकृति के साथ नाता जोड़कर जीवन के शेष दिन गुजारने की जरूरत है, वे तन और मन से बूढ़े नहीं होंगे। आर्थर हेल्पस ने ठीक ही कहा है — "प्रकृति आपको सामाजिक जीवन में प्रसन्नता और आनंद का निर्झर बनाना चाहती है, न कि निराशा और विषाद की यादों में समाधि।" अमेरिका का संगीतज्ञ कहता है कि "मनुष्य का सौंदर्य से प्रेम उसे चिंतनशील और सृजनशील प्रेमी बनाता है।" वैसे तो वह धन को पकड़ने वाला, आनंद की तलाश करने वाला और शक्ति का प्रयोग करने वाला है। वह आनंद की तलाश में धरती के छोर तक चला जाता है। प्रेम और सौंदर्य उसकी चिरंतन प्यास है। वह संगीत और सौंदर्य में, आनंद और मौज-मस्ती में शांत हो सकती है। सच मानिए, विधाता की सृष्टि में समस्त जीवधारियों में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है, जो सबसे अधिक आनंदित है। आनंद का उपहार सबसे बड़ा सौभाग्य है। महाकवि शेक्सपियर ने कहा था, "अपने दिमाग को हँसी-विनोद और मौज-मस्ती में लगाओ, जो एक हजार मुसीबतों और हानियों का दरवाजा बंद कर देता है और लंबी जिंदगी देता है।"

आमोद-प्रमोद संगीत, पर्यटन और ईश्वर भक्ति में मिल सकता है। एकांत और विषाद जीवन के विष हैं। संगीत सर्वोत्तम औषधि है। संगीत, सौंदर्य, प्रेम और समाज में घुल-मिलकर रहना वृद्धावस्था में कायाकल्प करने का युवा बनाए रखने का मुख्य व्यावहारिक स्रोत है। सेवानिवृत्त लोकगीत, संगीत और उत्सवों में भाग लेकर जीवन को सुखी और स्वस्थ बनाए रख सकते हैं। हमारे दैनिक जीवन की समस्याओं और मुसीबतों को संगीत की अमृत-धारा बहा देती है। किसी कवि ने कहा है-

**“संगीत मुझे प्रमुदित करता है, जब मैं संगीत से भर जाता हूँ
कुछ भी तो गलत नहीं होता, मेरा दिल गीत गुनगुनाता है।”**

पुस्तकों से प्रेम

ब्रिटेन के प्रो. हेराल्ड लास्की ने कहा था कि "पुस्तकों से बढ़कर व्यक्ति का कोई अच्छा दोस्त नहीं होता। ये अकेलेपन से लड़ने के लिए मनुष्य की सच्ची साथी साबित होती हैं।"

पुस्तकें ऐसी दोस्त हैं जो जवानों को राह दिखाती हैं, ताकि कहीं दुनिया में भटक न जाएं। बुढ़ापे में अकेलेपन और उदासी से निकालकर खुशियों की बहारों में ले जाती हैं। वे हमारी एकांत में मदद करती हैं और बोझ बनने से बचाती हैं। वे हमें चीजों और लोगों के चिड़चिड़ेपन को भुलाने में भी सहायता देती हैं। हमारी चिंताओं और आवेशों को शांत करती हैं और हमारी निराशाओं को भुला देती हैं। जब हम अपनी जिंदगी से थक जाते हैं तो हम पुस्तकों से निर्जीव को सजीव कर सकते हैं, जो अपनी बातचीत में चिड़चिड़ेपन और अभिमान का कुछ भी उद्देश्य नहीं रखती हैं। जब सेवानिवृत्त लोग अपनी नौकरी और व्यवसाय से अलग हो जाते हैं तो पुस्तकें उन्हें आने वाली मुसीबतों और समस्याओं से अलग रखती हैं। प्रसिद्ध कवि ऐलिस मोबट ने कहा था-

**“पुस्तकें हमारी मित्र हैं जो, मार्ग दिखाती हैं दूरगामी पथ पर।
छायादार तिमिर में होकर, ले जाती हैं पर्वतों की चोटी पर।।”**

**यदि आशाएँ शांत हो गई हैं, और आगे कुछ नहीं देख पाते,
आपकी आकांक्षाओं की आग, बुझ गई है, तो सच मानिए,
आप वृद्ध हो गए हैं।”**

वृद्धावस्था को हम निम्न लक्षणों के रूप में देख सकते हैं-

- मित्र बनाने की इच्छा न रखना और एकांत में सुख का अनुभव करना।
- नई पीढ़ी के पतन पर सोचते रहना। उनके साथ मधुर संबंध न बनाना।
- सदैव बीते हुए अच्छे दिनों की बातें करना और वर्तमान जीवन के सुखद क्षणों का तिरस्कार करना।
- अपने ऑपरेशन, बीमारियों और मुसीबतों को याद करना; परिवार, समाज और संसार से शिकायतें करते रहना।
- अपने दिमाग में व्यर्थ की भावनाएं रखना और अपने को पूर्ण ज्ञानी समझना आगे कुछ सीखने की जरूरत न समझकर ज्ञान का दरवाजा बंद कर लेना।
- वर्तमान जीवन में निराशा और चिंता में रहना, अच्छे और उज्ज्वल भविष्य की कामना न करना।
- दूसरों के दोष निकालना और अन्यायपूर्ण धारणाएँ रखना, आलोचना, तुलना तथा निंदा करना।
- केवल अपने बारे में सोचना प्रबल स्वार्थ की भावना है।
- नीरस, आलस्यपूर्ण और अकर्मण्य जीवन बिताना।

परोपकारी और दयावान

ओह! सूरज आ रहा है पूर्व के क्षितिज पर अपने प्रकाश की गरिमा के साथ, संसार को जगाने, प्रकृति को धूप में स्नान कराने, पौधों और लताओं को हरियाली से रँगने, कलियों को खिलाने के लिए, चूमने, फूलों को महकाने, चिड़ियों को चहकाने - बिना किसी स्वार्थ के। यह दिन का देवता अवकाश-प्राप्त लोगों को मनुष्य, स्त्री और बच्चों सभी के प्रति सहानुभूति और प्रेम का पाठ पढ़ाता है कि वे अपने जीवन के बहुमूल्य अनुभवों से दूसरों को मार्ग दिखाएँ; नंगे लोगों को कपड़ा, भूखे को भोजन, बीमार को दवा दिलाएँ और रोती-सिसकती मानवता के कपोलों से दुःख के आंसू पोंछें। इन परोपकार के कार्यों से उनके जीवन में सुख और आनंद का सैलाब आ जाएगा।

देखो, यह तीन वर्ष की बच्ची जमीन पर गिरी पड़ी, रो रही है – क्यों? सहानुभूति के लिए, प्रेम के लिए। माँ या परिवार के लोग उठाते हैं, कहते हैं – कुछ नहीं हुआ। चींटी मर गयी। यह सुनकर खुश होती है और कुछ क्षणों में खेलकूद में रम जाती है। प्रसिद्ध लेखक वर्ग ने कहा था – “प्रेम के बाद सहानुभूति मानव हृदय का दिव्यतम भाव है।”

आत्माओं में एक विशेष प्रकार की सहानुभूति तो है, जो उन्हें प्रत्येक प्राणी के योग्य बनाती है और उनकी हृदय की धड़कनों को सुनती है, जो वेदना से विगलित हैं। सेवा-निवृत्त लोगों के लिए यह जरूरी है कि वे परोपकार, दया और सहानुभूति के लिए दिल व दिमाग खोलकर रखें और हर समय दूसरों के दुःख हरने, सांत्वना देने और मदद करने के लिए तत्पर रहें। जीवन की सार्थकता इसी में है। इस संसार में आकर कुछ भला कर चले, फिर तो आना नहीं है। डेल कार्नेगी ने उद्धरण दिया है-

"मैं इस रास्ते से बस एक बार गुजरूँगा। इसलिए कोई भलाई का काम, जिसे मैं कर सकता हूँ या कोई भी दया और सहानुभूति किसी मानव आत्मा के प्रति दिखा सकता हूँ तो मुझे इसी समय करने दो। न तो मुझे देर करने दो और न तिरस्कार करने दो इसका; क्योंकि मैं इस रास्ते से फिर दोबारा नहीं गुजरूँगा।"

सच ! ईश्वर ने हमें इस संसार में जिंदगी देकर भेजा है, सो भी कुछ दिन की छुट्टी पर जब छुट्टी समाप्त हो जाएगी, हमें जाना पड़ेगा। जिंदगी लाई तो हम चले आए, अब हमें इस दुनिया में ईसान की भलाई के लिए काम करना ही उचित है। किसी दिन मौत आएगी तो चल देंगे। शायर जोश ने कहा था-



“लाई हयात आए, कज़ा ले चली चले,
अपनी खुशी न आए, न अपनी खुशी चले।”

खतरे में जनभाषा

साभार : बाजारवाद में हिंदी

पचास करोड़ की भाषा हिंदी, जिसमें 38 करोड़ में तो भारत ही इसका प्रयोग करने वाले हैं, इसके अलावा करोड़ों की संपर्क भाषा; सारी दुनिया में फैली हुई, जहां जहां भारतीयों के पांव पड़े हिंदी के साथ पड़े। मॉरिशस, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, जावा, सुमात्रा, बर्मा, फीजी, घाना, सूरीनाम, नेपाल और तमाम देशों में बसे और उन्हें बसाने में अपना खून-पसीना एक करने वाले करोड़ों भारतवंशियों की भाषा हिंदी है। पाकिस्तान और बांग्लादेश की तो एक तरह से वह मित्रभाषा ही है। कई देशों में हिंदी की शाखें फूट रही हैं। फीजी में 'फीजीबात', सूरीनाम में 'सरनामी', उजबेकिस्तान और कजाकिस्तान में 'पारय', दक्षिणी अफ्रीका में 'नेताली' हिंदी की नयी शैलियां हैं। यहां तक कि कुछ शैलियों ने तो अपनी व्याकरण और अपने कोश भी बना लिये हैं।

हिंदी के लिए यह सब संभव है और इस विकास में स्वयं हिंदी जैविकी (जेनेटिक्स) की जबरदस्त भूमिका है। यह जनभाषा है, इसका स्वभाव नदी जैसा है, जहां जिस घुमाव, ऊंचाई, निचाई में पहुंचती है अपना रूप-स्वरूप उसके अनुरूप बना लेती है। किसी भी जंगल, पहाड़, खंदक, एकांत या भीड़ भरे समुद्र में जाने से नहीं डरती। जब भारत के ही लगभग हर प्रांत में हिंदी की अपनी शैली है (जैसे बंबइया, बिहारी, बंगाली, गुजराती, तमिल) तो विदेश में यह अपनी तरंग और उमंग में उनके बीच रमती हो तो कोई अचरज नहीं। लिखने-पढ़ने की, ज्ञान-विज्ञान की भाषा के मानकीकरण को छोड़ दें तो हिंदी के इस जनस्वभाव के साथ किसी तरह का परहेज करने की जरूरत नहीं है। इस भाषा को और फैलाने में हिंदी अधिकारी, प्रोफेसर, राजनेता या तमाम पेशेवर हिंदीकर्मी, यहां तक कि लेखकों, कवियों की भी कोई खास भूमिका नहीं है। इसे श्रमिकों, किसानों और उन लोगों ने फैलाया है जिनकी रोजी-रोटी का इंतजाम स्थानीय स्तर पर नहीं किया जा सका। और जैसे जीविका के लिए उन्होंने भांति भांति के काम किये हैं, वैसे ही अपनी भाषा की भांति भांति से रूपसज्जा की है। पिछली सुनामी के समय निकोबार द्वीप से कुछ निपट आदिवासी पोर्टब्लेयर लाये गये तो यह जान कर आश्चर्य हुआ कि वे मीडिया से 'अपनी' हिंदी में बात कर रहे थे। यह हिंदी कभी मर नहीं सकती, न सीमाओं में कैद हो सकती है। जिन्हें यह अभिमान हो कि वे हिंदी के प्रचार-प्रसार में बड़ा योगदान कर रहे हैं उन्हें यह लबादा उतार फेंकना चाहिए। जैसे गरीब जनता अपने हाथ-पांवों के भरोसे है वैसे ही गरीबों की यह भाषा अपने हाथ-पांवों के।

त्रासदी तो यह है अधिकांश पेशेवर लोगों, हिंदी नेताओं, राजनीतिज्ञों और उन लोगों ने हिंदी को नुकसान ही पहुंचाया है, जिन पर हिंदी के उन्नयन और प्रसार का जिम्मा रहा। असल में उनका काम था हिंदी के उस व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करना, गढ़ना और जीवंत बनाना जो ज्ञान-विज्ञान, सूचना, अनुवाद आदि के बौद्धिक काम में आ सके। आजादी के बाद यह काम मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र से निकल कर पेशे या नौकरी के क्षेत्र में आ गया। सरकारी या सरकार समर्थित तंत्र ने ही कोश-निर्माण और अनुवाद आदि का काम किया। परंतु इस तरह जितने अधिकृत अनुवाद हुए हैं उनमें से अधिकतर अपठनीय हैं। भारत के संविधान का एक भाग, एक वक्त मैंने कानून मंत्री को सुनाया था। वे हिंदीभाषी थे। उस अंश को समझने के लिए उन्हें अंग्रेजी अनुवाद की जरूरत पड़ी। अगर हम जनतंत्र के संविधान को जनता तक उसकी भाषा में ही नहीं पहुंचा सके तो उसे जागरूक कैसे बनायेंगे? निश्चय ही जनता की यह भाषा सरकारी भाषा से अलग है। कई बार जब सरकारी या सरकार समर्थित संस्थाओं की हिंदी पढ़ते हैं तो इतनी कोफ्त होती है कि क्या यह इसलिए लिखी गयी है कि यह पूरी तरह सिद्ध हो जाये कि हिंदी पढ़ने और समझने की भाषा नहीं है या बेहद असमर्थ और उबाऊ भाषा है। तकनीकी शब्दावली, मानकीकरण आदि ऐसे बहाने बनाये जाते हैं जो काहिली के अलावा किसी सच का बयान नहीं करते। इस समय हिंदी में प्रतिमास सैकड़ों अनूदित पुस्तकें छपती हैं। प्रायः सभी पुस्तकों की भाषा जीवंत और पठनीय होती है। फिर सरकारी तंत्र को ही ऐसी कौन सी अजूबी भाषा मिल गयी है? भाषाई

संरचना और पारिभाषिक शब्दों के इर्द-गिर्द बुनी भाषा से उसका सहज स्वभाव प्रकट हो सकता है, यह मर्म तो समझते नहीं, उलटे पूरी रचना को ही पारिभाषिक शब्दों का झुंड बना देते हैं। हमारी दूसरी परेशानी है- हिंदी को हम मूल में नहीं, अनुवाद में लिखते हैं। सरकारी हिंदी अकसर अनूदित हिंदी होती है; यह भी प्रायः अंग्रेजी में सोच कर, उसकी संरचनात्मक नकल करते हुए लिखी जाती है। क्योंकि तब उसकी सहजता लुप्त हो कर उसमें एक साम्राज्यवादी अकड़ पैदा हो जाती है। इसलिए जब सरकार और सरकार समर्थित सारा तंत्र जोर-शोर से हिंदी के प्रचार-प्रसार का डंका पीटता है और ऊंचे आंकड़े दिखाता है तब हंसी आती है, क्योंकि वास्तविकता हमारे सामने है, परिमाण में भी और गुण में भी।

अगर भारतेन्दु युग से प्रारंभ खड़ी बोली हिंदी के साहित्यिक स्वरूप को देखें तो सौ साल में उसने जैसी प्रगति की है, उसकी मिसाल शायद ही दुनिया की किसी भाषा में मिले। परंतु साहित्येतर लेखन का बनता-बनता अभ्यास कहीं पीछे छूट चुका है। गत दिनों अंग्रेजी शिक्षा, कंप्यूटर की विधाओं और बाजार की शक्तियों ने तो हिंदी में साहित्येतर लेखन को लगभग परिदृश्य से बाहर कर दिया है। अपने ही देश में हुई हिंदी की दुर्गति से दुनिया में हिंदी की अभिवृद्धि को धक्का पहुंचा है। भारत में तो हिंदी और भारतीय भाषाओं की दुर्दशा के हम साक्षी हैं, परंतु विदेशों में भी दिन पर दिन हिंदी पढ़ने, लिखने वालों की संख्या घट रही है। जनता में हिंदी अपने कारणों से फैल रही है, लेकिन प्रबुद्ध समाज से हिंदी लुप्त होती जा रही है। अब्बल तो हिंदी में साहित्येतर विषयों की पुस्तकों का अकाल है, सारे प्रतिभाशाली लेखक हिंदी (और भारतीय भाषाएं) छोड़ कर अंग्रेजी में चले गये हैं; वहीं शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, प्रशासन, राजनीति आदि के अध्ययन विचार के क्षेत्र में हिंदी का मान लगातार घट रहा है। आजादी के बाद विश्वभर के प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग थे और छात्रों की संख्या बढ़ रही थी, अब यहां भी लगातार यह कम होती जा रही है क्योंकि सर्वत्र शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। हिंदी ही क्या, भारत की सभी भाषाओं की पढ़ी-लिखी अगली पीढ़ी अपने साहित्य को अपनी भाषा में न पढ़ कर उसका अंग्रेजी अनुवाद मांगेगी।

अब तो अपनी भाषा या मातृभाषा के गुणगान का भी कोई लाभ नहीं रहा। हम हिंदी का कोई अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बना भी लें तो क्या तय है कि वह प्रांतीय हैसियत से भी गया बीता होगा और वहां हिंदी ही सबसे अवांछित भाषा होगी और ऐसा होने पर वहां का कोई अधिकारी शर्मसार भी नहीं होगा। कार्यपरिषद और विद्यापरिषद तक के लिए दी जाने वाली सामग्री का 90 प्रतिशत भाग अंग्रेजी में हो तो आप क्या करेंगे? यानी अब हमें हिंदी के नाम पर खुलने वाली संस्थाओं द्वारा हिंदी के अपमान और विस्थापन के लिए भी तैयार हो जाना चाहिए। इतना ही नहीं, वहां न कोई परिकल्पना है न सृजनशीलता, न हिंदी के व्यापक स्वरूप का संज्ञान है। सही यह है कि हमारे मन में अपनी भाषा से, यहां तक कि अपने देश से प्यार खत्म हो रहा है। जिन महात्मा गांधी ने स्वाधीनता के बाद बी.बी.सी. के एक पत्रकार द्वारा अंग्रेजी में पूछे गये प्रश्न के उत्तर में कहा था कि "दुनिया को खबर कर दो कि गांधी को अंग्रेजी नहीं आती," उन्हीं के नाम पर खुली संस्थाओं में अंग्रेजी का बोलबाला है। अगर उनके नाम पर आज अंडे बेचे जा सकते हैं और इस देश के प्रबुद्ध समाज से विरोध की आवाज तक नहीं उठती; सरकार, न्यायालय, मीडिया सब खामोश रहते हैं, तब गांधी के मानव मूल्य और भाषा - मूल्य के ध्वंस पर कौन जबान खोले! यानी गांधी के नाम पर हर तरह की बेशर्मी, हिंसा, अन्याय और झूठ फैलाने की भारत में खुली छूट है। यानी 'गांधीगिरी' करने की। खैर! इतना ही क्या कम है कि 14 सितंबर की तरह 2 अक्तूबर भी ठीक-ठाक मन जाता है।



हिंदी के जिस विस्तार से हम खुश हैं, वह खुशी बच्चों की खुशी से भी भोली है। सिनेमा, दूरदर्शन, प्रचार पट्ट (होर्डिंग) और जगह जगह हिंदी का प्रयोग जनता के लिए नहीं, बाजार के लिए हो रहा है। वे हिंदी नहीं बोल रहे हैं, वे अपना सामान बेच रहे हैं, गिरमिटिया हिंदी को सिर पर लाद कर बाजारू हिंदी को खेत-खलिहान, कारखाने और घर-घर में उतार रहे हैं। हिंदी पर हिंदी की यह सवारी क्या ही अनोखी है-जैसे आदमी को ढोता आदमी-रिक्शा! और सच्चाई देखिए कि क्या प्रचारित वस्तु पर लिखी भाषा हिंदी है? आप 'कौन बनेगा करोड़पति' टी.वी. कार्यक्रम में परदे पर लिखी भाषा देखिए; दफ्तरों, कारखानों, पत्र-व्यवहारों की भाषा देखिए, यानी भाषा के वे ठिकाने जहां भाषा अपना वैचारिक, बौद्धिक, ज्ञानात्मक स्तर पर लिखित अस्तित्व पाती है वहां से भाषा गायब है। सोचें कि जहां आपको ससम्मान रोजी-रोटी मिलती है- क्या वहां हिंदी है?

हिंदी का प्रायः जितना पढ़ा-लिखा समुदाय है, जितने पेशेवर लोग हैं (कुछ अपवादों को छोड़ दें तो), उनके मन में भाषा के प्रति कोई दर्द नहीं, कोई लगाव नहीं। उन्हें पता ही नहीं कि वे क्या खोने जा रहे हैं? - अपनी अस्मिता, स्वाधीनता, देश की आवाज, ज्ञान-विज्ञान, सोच-विचार, संस्कृति और जाने क्या क्या! हम राजनीतिक गुलामी से आधी बीसवीं सदी तक लड़ते रहे और आधी सदी को हमने मानसिक गुलामी पाने, अपना और ओढ़ने में जाया कर दिया। बीसवीं सदी में हमने कथित विश्वतंत्र, कथित विश्वबाजार और कथित विश्वभाषा के हाथों अपने को पूरी तरह सौंप दिया है, गोया पराधीनता का नया प्रतिमान बना रहे हों। अब हम अंग्रेजी राज के प्रशंसक हैं, अंग्रेजी के प्रशंसक हैं, हिंसा के प्रतिरूप 'एटमी शक्ति' के प्रशंसक हैं, द्विराष्ट्रवाद के प्रशंसक हैं।

यहां विस्तार से बात करने का अवसर नहीं है, अपनी भाषा - विहीनता के गूढ़ अर्थों में जाने के लिए खूब बड़ा विस्तार चाहिए और उसकी व्यापक क्षतियों के आकलन का कोई हिसाब नहीं! वैचारिक अराजकता और स्वार्थ केंद्रितता के दौर में कोई भी सर्वहितकारी आवाज गुम हो जाती है। महाभारत के घोर विनाश को देखते हुए कृष्ण ने हताश होकर कहा था कि मेरी कोई नहीं सुनता है। आज ऐसी ही घड़ी है जब हमें अपने भीतर उठी कृष्ण की आवाज सुनाई नहीं पड़ रही।

हिंदी आम जनता की गरीबों की भाषा हो यह तो ठीक है, पर हिंदी में रहने के कारण लोग विचार- ज्ञान से 'गरीब' बने रहें, यह लज्जाजनक है।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा किये गए राजभाषाई निरीक्षण

(अहमदाबाद कार्यालय)

❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 18-10-2022 को वाष्कोस के अहमदाबाद कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाष्कोस अहमदाबाद कार्यालय, मुख्यालय व जल शक्ति मंत्रालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे:-

1. श्री एस.के.श्रीवास्तव, परियोजना निदेशक, अहमदाबाद कार्यालय
2. श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास
3. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)
4. श्री दलीप कुमार सेठी, प्रबन्धक (रा.भा.का.)
5. श्री कौस्तुब तिवारी, उप मुख्य अभियंता, अहमदाबाद कार्यालय
6. श्री अतुल जैन, आयुक्त, जल शक्ति मंत्रालय
7. श्री विजय सिंह मीना, निदेशक, (रा.भा.), जल शक्ति मंत्रालय



उक्त निरीक्षण का समन्वय कार्य वाष्कोस को सौंपा गया था जिसकी समिति सदस्यों द्वारा सराहना भी की गई।

(रायपुर कार्यालय)

❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 14.11.2022 को वाष्कोस के रायपुर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाष्कोस रायपुर कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे:-

1. श्री वी.अरुण देव, परियोजना प्रबन्धक, रायपुर कार्यालय
2. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)



(चण्डीगढ़ कार्यालय)

❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 05.01.2023 को वापकोस के चण्डीगढ़ कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण दिल्ली के विज्ञान भवन में किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वापकोस चण्डीगढ़ कार्यालय, मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे:-

1. श्री एस.के. त्यागी, परियोजना निदेशक, चण्डीगढ़ कार्यालय
2. श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास
3. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
4. श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)
5. श्रीमती प्रज्ञा औझा, परियोजना प्रबन्धक, चण्डीगढ़ कार्यालय



उक्त निरीक्षण का समन्वय कार्य वापकोस को सौंपा गया था जिसकी समिति सदस्यों द्वारा सराहना भी की गई।

(पुणे कार्यालय)

❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 18.01.2023 को वाष्कोस के पुणे कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण मुंबई में किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाष्कोस पुणे कार्यालय व मुख्यालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे:-

1. श्रीमती रीता बर्मन, अपर मुख्य अभियंता, पुणे कार्यालय
2. श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास
3. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
4. श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)



(जयपुर कार्यालय)

❖ संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 27.02.2023 को वाष्कोस के जयपुर कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण जोधपुर में किया गया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाष्कोस जयपुर कार्यालय, मुख्यालय व जल शक्ति मंत्रालय से निम्नलिखित अधिकारी समिति के समक्ष उपस्थित थे :-

1. श्री आर.के.सिंह, परियोजना प्रबन्धक, जयपुर कार्यालय
2. डॉ. आर.पी.दूबे, मुख्य कार्यकारी निदेशक (पत्तन, बंदरगाह व अंतर्देशीय जलमार्ग)
3. श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.)
4. श्री दलीप कुमार सेठी, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)
5. श्री आर.सतीश, आर्थिक सलाहकार व राजभाषा प्रभारी, जल शक्ति मंत्रालय
6. श्री विजय सिंह मीना, निदेशक (रा.भा.), जल शक्ति मंत्रालय
7. श्री सज्जन कुमार, सहायक निदेशक (रा.भा.), जल शक्ति मंत्रालय



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2022-23 की दूसरी छमाही बैठक व पुरस्कार वितरण

- ❖ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.) गुरुग्राम की वर्ष 2022-23 की दूसरी छमाही बैठक श्री आर.के.अग्रवाल, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाष्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुरुग्राम की अध्यक्षता में दिनांक 23.12.2022 को प्रातः 11.00 बजे गुरुग्राम कार्यालय के समिति कक्ष में आयोजित की गई।

बैठक में नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख या उनके प्रतिनिधि तथा उनके साथ हिन्दी अधिकारी भी उपस्थित थे। बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा भी उपस्थित थे।

सबसे पहले श्री प्रेम प्रकाश भारद्वाज, प्रमुख (मा.सं. व रा.भा.का.) तथा सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक में उपस्थित नराकास अध्यक्ष, गुरुग्राम तथा सभी कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन) का हार्दिक स्वागत किया गया।

तत्पश्चात सदस्य सचिव के अनुरोध पर नराकास, गुरुग्राम के अध्यक्ष, श्री आर.के.अग्रवाल, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, श्री के. श्रीकान्त तथा राइट्स लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री राहुल मिथल एवं गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा का बैठक में उपस्थित उच्चाधिकारियों से पुष्पगुच्छ देकर हार्दिक स्वागत करवाया गया। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सदस्य सचिव, नराकास, गुरुग्राम द्वारा बैठक की विभिन्न मदों पर विधिवत् रूप से चर्चा की गई।



बैठक में अध्यक्षीय कार्यालय वाष्कोस लिमिटेड द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा हिन्दी में किये जा रहे कार्यों की पीपीटी बनाकर दिखाई गई। बैठक के उपरान्त अध्यक्ष, नराकास द्वारा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले तीन कार्यालयों नामतः वाष्कोस लिमिटेड – प्रथम पुरस्कार, पावर ग्रिड – द्वितीय पुरस्कार तथा इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड को – तृतीय पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।



इसी प्रकार वर्ष 2021-22 की गृह पत्रिकाओं हेतु भी तीन कार्यालयों नामतः भारतीय खाद्य निगम, खाद्य सुरक्षा संस्थान – प्रथम पुरस्कार, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय – द्वितीय पुरस्कार तथा कीटनाशक सूत्रीकरण प्रौद्योगिकी संस्थान को – तृतीय पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रमाण पत्र प्रदान किये गए। इसके अलावा वर्ष 2022 के दौरान सितम्बर तक सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित करवाई गई प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये गए।

इस अवसर पर अध्यक्ष, नराकास गुरुग्राम द्वारा नराकास, गुरुग्राम की वार्षिक पत्रिका 'राजभाषा अनुराग' वर्ष 2021-22, अंक-6 का विमोचन भी किया गया।

हिन्दी का मान करें हम हिन्दी का सम्मान करें
हर दिन होगा "हिन्दी दिवस" गर राजभाषा में हम काम करें

सब जल्दी में

साभार : दूषित होने की चिंता

पिछले एक-डेढ़ दशक में एक परिवर्तन बहुत ही चुपचाप हुआ है जिसकी ओर सामान्यतः चिंतनशील समाज का, विचारकों का ध्यान नहीं गया,। वह है पढ़े-लिखे वर्ग का अल्फाबेट के 'A' या 'अ' अक्षर के प्रति अतिरिक्त पिछले 10- 15 साल में पैदा होने वाले अधिकांश बच्चों के नाम अब ए से शुरू होते हैं सभी क्लासों में अंकित, अमित, अक्षय, आदित्य, अनुज, अनुभव, अविनाश, आकाश, अदिति, अनामिका, अक्षरा, अक्षिता, अनुष्का जैसे नामों की भरमार है यह अनायास नहीं हुआ है यह प्रतियोगी गला काट स्पर्धा का परिणाम है जो हमें बार-बार अपने इरादों में आगे बढ़ते जाना है का पाठ पढ़ाती है बच्चों का नाम अ से रहेगा तो क्लास में उसका नाम पहले पुकारा जाएगा बड़े होने पर किसी भी इंटरव्यू में वह अपने नाम के कारण और अव्वल ही याद किया जाएगा। बहुत से शिक्षकों से बात करने पर मालूम हुआ कि उनकी क्लास में 40 में से 10-15 बच्चों के नाम ए से शुरू होते हैं सब आगे रहना चाहते हैं कोई पीछे नहीं होना चाहता बच्चों के माता-पिता और रोजगार का अवसर तलाशते युवक- युवतियों का तर्क है कि जल्दी नहीं करेंगे तो पीछे रह जाएंगे सब जगह कंपीटीशन बहुत ज्यादा है औसत नंबरों से काम नहीं चलेगा कंपीटीशन में आगे आने के लिए शुरू से कैरियर के प्रति ध्यान देना होगा बच्चों को बचपन से ही कैरियर और कोर्स पढ़ाना जरूरी है भविष्य के प्रति चिंता समाज नहीं सोच पा रहा है कि दिन-प्रतिदिन रोजगार के अवसर कम हो रहे हैं ऐसे समय में जब रोजगार कार्यालय अपनी उपयोगिता खो चुके हैं या फिर संविदा नौकरी के लिए पदों को विज्ञापित कर भरा जाने लगा है। बाजार नहीं समाज की तेजी से आगे बढ़ने की प्रवृत्ति को ताड़ लिया है यह सब चीजें जल्दी शॉर्टकट में उपलब्ध कराने के फंडे समझाने लगा है सब कुछ जल्दी में पाने की होड़ है कम श्रम कम मेहनत और कम अध्ययन से सब कुछ चाहिए और सबसे पहले चाहिए नई समाज नहीं अब इस बात को झूठ लाना शुरू कर दिया है कि जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ हावड़ा टू बंदर आ रहा किनारे बैठ अब तो फेविकोल का फैविसिटक लगाकर तुरंत मछली फंसाने का चलन है मछली पकड़ने के लिए घंटों जाल डालने की जरूरत नहीं जल डालकर घंटो बैठने वाला बेवकूफ करार दिया जा रहा है 21वीं सदी में पहुंचे और पहुंचने की दौड़ में शामिल समाज के ज्यादातर लोगों में धैर्य की कमी साफ दिखाई पड़ती है लोग भूल जाते हैं कि शताब्दियों के बदल जाने से समय नहीं बदलता इसके लिए जरूरत होती है विचारों को बदलने की अपने समय की विसंगतियों को समझ कर उसके खिलाफ खड़े होने लड़ने की जल्दी से जल्दी आगे जाने की प्रवृत्ति के कारण पूरी पर्सनालिटी में परिवर्तन दिखता है मानवीय संवेदना के राज के साथ एक दूसरे को रौंदकर आगे बढ़ने की ओर है घर परिवार में आपसे स्पर्धा है सब एक दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं उसकी साड़ी मेरी साड़ी से सफेद कैसे के जयघोष के बीच भौतिक सुख सुविधाओं को लेकर भारी कंपीटीशन है।

पल प्रतिपल अपडेट होती, बदलती खबरों के बीच रह रहे समाज को जल्दी से जल्दी खबरें देने के चक्कर में मीडिया ब्रेकिंग न्यूज के जरिए आधी अधूरी अपोस्ट और बहुत सी ऐसी चीजें दे रहा है जिसकी जरूरत नहीं है, चीजों के तथ्यों को गहराई से जानने की जरूरत खत्म हो रही है जो कुछ रेडीमेड है जो कुछ जल्दी में उपलब्ध है वह सब परोसा जा रहा है यही हाल बच्चे की पढ़ाई का है वहां से बेसिक नॉलेज गायब है बच्चों को पूरा पाठ पढ़ाने की जरूरत नहीं है उसे तो मेन पॉइंट पढ़ा दो इतना बता दो कि कौन-कौन से चैप्टर परीक्षा में पूछे जाएंगे स्कूलों में वह पढ़ाया जा रहा है जो परीक्षा के लिए जरूरी है सबको रिजल्ट चाहिए

चाहे फिर उसके लिए किसी भी तरह के साधन क्यों ना अपनाने पड़े अभिभावकों को बेहतर रिजल्ट कार्ड चाहिए प्रिया रिजल्ट कैसे आया के दबावों के चलते बच्चे ने अपना परसेंटेज बढ़ाया इसके बारे में सोचने की जरूरत उन्हें नहीं है साल भर की प्रैक्टिस की बजाय समर कैंप विंटर कैंप में सारे खेल सीखने का चलन बढ़ा है साहित्यिक गोष्ठियों, आयोजनों में बिना किताबे पढ़ें उसकी समीक्षा करने वाले किताब पर बोलने वालों की संख्या बढ़ी है, तेजी से आगे बढ़ने की इस नई प्रवृत्ति ने पूरे परिवार, समाज और देश को एक ऐसी अंधी प्रतिस्पर्धा में लाकर खड़ा कर दिया है, जो थकती नहीं दिखती। एकला चलो रे के इस दौर में संयुक्त परिवार तेजी से टूट रहे हैं छोटे परिवार में भी टूटन दिखती है, जुझारूपन संघर्षशीलता में कमी आई है अपेक्षित रिजल्ट नहीं मिलने पर डिप्रेशन, आत्महत्या, नशा करना जैसे प्रवृत्तियां बढी हैं, हमें थोड़ा रुककर इत्मीनान से सोचने की जरूरत है कि हम तेजी से कहां जा रहे हैं, हमारी इच्छाओ, अपेक्षाओं का कहीं अंत है या नहीं, या फिर हम पूरी तरह से अपने को बाजार के हवाले तो नहीं कर रहे है।



**शिक्षा सबसे
शक्तिशाली हथियार है
जिसका उपयोग आप
दुनिया को बदलने के
लिए कर सकते है.**

नेल्सन मंडेला

दावत

साभार : लोक कथाएँ

रामदास सुबह खेत पर बिना खाना खाए चला गया क्योंकि उसकी पत्नी बीमार चल रही थी। फावड़ा चलाते-चलाते दुपहरी ढल गई। फावड़ा चलाने से भूख कुछ ज्यादा ही खुलकर लगती है। उसने घर आकर बरोसी से मिट्टी की हंडिया निकाली। जिसमें सुबह में खिचड़ी पकाने रख गया था तभी उसकी पत्नी बोल उठी, 'सुबह से दो बार डोल गया है ठाकुर जी के लड़के की सगाई है'।

'अच्छा' वह खुशी से झूम उठा कई दिन से ही खिचड़ी खाता आ रहा था आज दावत खाने को मिलेगी। मैं यूं ही चलने को तैयार हुआ तभी पत्नी ने कहा 'नहा धोकर नए कपड़े पहन कर जाओ। वहां बड़े-बड़े लोग आए होंगे। यूं ही चले गए तो पसीने की बदबू आएगी'। नहा धोकर नए कुर्ता धोती पहन कर वह घर से निकला ही था कि तभी हरिया उसे देखते ही बोला 'भैया दावत खाने चल रहे हो' 'हां भैया' रामदास बोला

दोनों साथ - साथ दावत की जगह पहुंचे। पंगत चल रही थी। एक तरफ पंगत में खाने का इंतजार कर रहे लोग खाटों पर बैठे थे। वे दोनों भी उस तरफ जा बैठे। वहां लोग बैठे महंगाई पर चर्चा कर रहे थे। हरिया बोला, 'भैया कितनी भी महंगाई आ जाए पर, गांव में खाना और खिलाना कभी बंद नहीं होगा'।

'अजी यह कैसे बंद हो जाएगा। इससे तो भैया बंदी और मजबूत होती। एक साथ कई आवाजें उभरी। गांव में अब ऐसे भी लोग होते जा रहे हैं जो दावत खाना तो पसंद करते हैं पर अपनी बारी आती है तो चुप लगा जाते हैं।' हरिया कह रहा था परंतु रामदास को लग रहा था कि मुझसे ही कह रहा है। उसकी आंखें जमीन में गड़ने लगी।

**'तुम्हारी पता चलेगी, जब लड़के की सगाई में दावत दोगे'।
एक सज्जन बोले तो शुभ दिन आने दो बोहरे,
वह ठाट की दावत दूंगा कि गांव वाह के उठे'**

हरिया रामदास की तरफ इशारा करता हुआ बोला 'मैं उनमें से नहीं जो दावत खाने तो आते रहते हैं और जब अपनी बारी आती है तो आदमी की तो दूर कुत्ते, गाय को भी चंदिया नहीं खिलाते हैं' आगे भी रामदास की ओर देखते हुए कुछ जोर से बोला 'मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसे लोगों का दावत में खाने को मुंह कैसे खुल जाता है' उसके कहने भर से सब खिलखिला कर हंस पड़े।

रामदास बुरी तरह बेचैन हो उठा मानो उस पर खोलता हुआ पानी डाल दिया गया हो। पंगत उठ गई थी। बैठे हुए लोग खाने को बढें किंतु रामदास बिना खाए अपने घर की ओर चल पड़ा।

ई वेस्ट से प्रदूषण का एक नया खतरा

साभार : पर्यावरण पर प्रदूषण का कहर

प्रदूषण का नया खतरा है इलेक्ट्रॉनिक कूड़ा कबाड़ जिसे ई-वेस्ट कहते हैं, आज पूरी दुनिया में एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है। साइबर क्रांति की देन है ई-वेस्ट पर्यावरण के लिए किसी गंदे पानी, रसायन से अधिक खतरनाक है। विकसित देश अपने ई-जंक को विकासशील एवं गरीब देशों में खपा रहे हैं। इससे वहां के वातावरण को खतरा पैदा हो गया है। साइबर क्रांति की इस दौड़ में हम भी काफी तेजी से दौड़ रहे हैं लेकिन अब आवश्यकता है इस खतरे की तरफ ध्यान देने की इलेक्ट्रॉनिक प्रदूषण से बचाव करने की।

आईटी के क्षेत्र में हो रही दिन दूनी- रात चौगुनी तरक्की यूं तो कल्याणकारी है परंतु उसने एक तकनीकी और व्यावहारिक समस्या भी खड़ी कर दी है। यह परेशानी है परंतु कंप्यूटर के बढ़ते अंभार की। जैसे बाजार में हर रोज नई नई खूबियों और अधिक से अधिक मेमोरी वाले कंप्यूटरों के आने से अधिक पुराने कंप्यूटर को लोग यों त्याग रहे हैं जैसे पुराने कपड़े। विशेष बात यह है कि लाख ढूंढने पर भी इन पुराने कंप्यूटर के खरीददार नहीं मिलते। अतः पश्चिमी देशों में लोग मजबूर होकर इन्हें कूड़े कचरे के ढेर के हवाले कर देते हैं या फिर फूंकने के लिए आधुनिक संयंत्रों को सौंप देते हैं। परंतु पुराने कंप्यूटर से पीछा छुड़ाने के दोनों ही तरीके पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है। कारण यह है कि पुराने कंप्यूटर में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मौजूद होते हैं, जैसे - लैड सीसा, कैडमियम मर्करी या पारा आदि। अमेरिका की पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी ने कबाड़ को एक तेजी से उभरता हुआ पर्यावरण खतरा बताया है।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि हर साल रिटायर होने वाले कंप्यूटर को ढेर की शक्ल में खड़ा कर दिया जाए तो शायद इसकी ऊंचाई एवरेस्ट पर्वत को चुनौती देने लगे।

समस्या से निपटने की योजना

उक्त समस्या से निपटने के लिए दुनिया भर में तैयारी चल रही है जिसके तहत पुराने पीसी के विभिन्न हिस्सों को दोबारा उपयोग में लाने की योजना है। पुराने कंप्यूटरों को निपटाने का धंधा, कचरे से कंचन बनाने जैसा है। कंप्यूटर के कबाड़ में सोने चांदी जैसी कई मूल्यवान धातु छुपी रहती हैं। उदाहरण के तौर पर पेंटियम और प्रोसेसर सुनहरे होते हैं। पर्यावरण विशेषज्ञों ने पाया कि पुरुष महिलाओं और बच्चों तक सभी लोग बेखौफ होकर इन कंप्यूटर अवशेषों के ढेर में से तार खींचकर रात को जलाते रहते हैं और हवा में प्रदूषण फैलाते रहते हैं जो कि वातावरण में कैंसर फैलाने वाला धुआं घोलते रहते हैं। इलेक्ट्रॉनिक कूड़ा पर्यावरण में इतनी बुरी तरह जहर घोलता है कि पीने के पानी को विषाक्त बनाने के साथ-साथ बच्चों की सेहत पर बुरा असर डालता है बच्चों में जन्मजात विकलांगता आती है। मछलियों से लेकर वन्यजीवों का जीवन भी प्रभावित होता है। विडंबना यह है कि विकसित देशों द्वारा यह तमाम इलेक्ट्रॉनिक कचरा विकासशील देशों या अल्पविकसित देशों में लाकर पटक दिया जा रहा है।

वास्तव में मुद्दा यह है कि इस इलेक्ट्रॉनिक कूड़े कचरे को हम ई-वेस्ट, ई-जंक, ई-गार्बेज जैसा कोई भी नाम दें, परंतु जरूरत है इस पर ध्यान देने की कंप्यूटर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में 1000 से भी अधिक ऐसे पदार्थ रहते हैं जो बहुत अधिक नुकसान पहुंचाते हैं।

प्लास्टिक से बनेगी बिजली

आधुनिकता की पहचान बन चुकी प्लास्टिक, जो समाज के लिए खुद एक बड़ा खतरा है। इससे निपटने के लिए अब वैज्ञानिक विभिन्न उपायों पर विचार कर रहे हैं ताकि इस हानिकारक वस्तु का उपयोग समाज की भलाई के लिए किया जा सके। इसी प्रयास के तहत प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग करके ऊर्जा उत्पादन करने की पहल की गई है।

वैज्ञानिकों के एक बड़े वर्ग का मानना है कि यह ऊर्जा अन्य विधियों से बनाई जाने वाली बिजली से लाभकारी होगी परंतु ऐसा समझा जाता है कि ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में यह एक अभूतपूर्व कदम सिद्ध होगा तथा बेहतर ऊर्जा का साधन बन जाएगा, देश के अग्रणी वैज्ञानिकों ने भी यह बात स्पष्ट की है कि भले ही हम प्लास्टिक वेस्ट के प्रति घृणास्पद दृष्टि अपनाते हैं परंतु यह भी सत्य है कि प्लास्टिक के इस कचरे का समुचित प्रबंधन करके हम इसके गुणों का सदुपयोग भी अवश्य कर सकते हैं इस तरह की वैकल्पिक ऊर्जा का उत्पादन व्यवसाय के ढंग से करके या प्लास्टिक के कचरे की रिसाइक्लिंग करके ना केवल हम पर्यावरण को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था तथा बेहतर ऊर्जा नीति का भी विकास कर सकते हैं।



विश्व पर्यावरण: खतरे के संकेत

साभार : विश्व पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन

विश्व पर्यावरण इतनी द्रुतगति से क्षरित हो रहा है कि आने वाले वर्षों में इस भयावह क्षरण को रोक पाना अत्यंत कठिन होगा विश्व के देशों में आबादी का बड़ी तेजी के साथ बढ़ना भी प्रमुख कारण है। आबादी के बढ़ने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है एवं शांति व सुखचैन खतरे में पड़ जाते हैं। इसमें सर्वाधिक प्रभावित जैविक विविधता होती है। पेय जल के संसाधन बढ़ती आबादी के घनत्व से प्रभावित होते हैं एवं उनमें छेड़छाड़ की प्रक्रिया से प्रदूषण बढ़ता है जब प्रदूषण बढ़ता है तब मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है तथा तरह-तरह की महामारी आने लगती है। पर्यावरण का संतुलन एवं पर्यावरण प्रणाली गड़बड़ाने लगती है। इस प्रकार बढ़ती मानव आबादी, उसकी गतिविधियां प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पर्यावरण को प्रभावित करती हैं इनमें सर्वाधिक प्रभावित जलीय संसाधन होते हैं जिन से मनुष्य को पीने के लिए स्वच्छ जल प्राप्त होता है जल प्रदूषण के कारण विश्व के अनेक देशों में तरह-तरह की बीमारियां फैल रही हैं। जल से सभी बीमारियों का संक्रमण बड़ी तेजी से होता है तथा शरीर तरह-तरह के रोगों की चपेट में आ जाता है। अरे सर्वप्रथम पेयजल स्रोतों को अत्यधिक साफ सुथरा एवं प्रदूषण मुक्त रखा जाना चाहिए विश्व के अनेक देशों में प्राकृतिक जल संसाधनों, नमो भूमि एवं पर्यावरण को बचाने के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं जो कि एक प्रकार से रचनात्मक जनचेतना है। जिन देशों में पर्यावरण चेतना व्यापक रूप से सफल रही है उनमें भारत सर्वोपरि है विभिन्न संगोष्ठी और सम्मेलनों एवं समारोह के द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं जल प्रबंधन के व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं इसी प्रकार स्कूल एवं कॉलेजों में पर्यावरण संगोष्ठी व बैठकों एवं वार्तालाप से तरह-तरह की बैठकों एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रमों को गति मिली है। विभिन्न विद्यालयों में पर्यावरण संरक्षण अभियान में वृद्धि हुई।

सर्वाधिक अचंभित करने वाली बात तो यह है कि गत दो दशकों में आए भूकंप से हिमालय के क्षेत्रों में अविरल बहने वाले श्रोताओं ने अपने रास्ते बदल लिए हैं इसे कुछ क्षेत्रों में धरती में आंतरिक परिवर्तन होने से जलस्तर सूख गए हैं कुछेक में जलस्तर बहुत कम हो गया है तो कुछ स्थानों पर जल स्तर में भारी वृद्धि देखी गई कुछ दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में से एक प्राकृतिक घटना नहीं मानते पर एक दैविक प्रकोप समझते हैं धरती के अंदर होने वाले कंपन एवं गर्मी से सर्व प्रजातियां बहुत घबराहट व्यक्त करती हैं एवं धरती की गहराई से सतह पर आकर इधर-उधर भागने की कोशिश करती हैं इस प्रकार यह प्रकृति प्रदत्त ऐसा आभास या पूर्वानुमान है जिससे पशु पक्षी एवं सरीसृप भी इस प्रकार के परिवर्तनों को समझ लेते हैं।

विश्व के कई देशों में वन विनाश की प्रक्रिया जारी है जो बिगड़ते विश्व पर्यावरण के लिए खतरे का संकेत है। धरती पर पेयजल संकट एवं वायु मंडल के गरमाने का प्रमुख कारण धरती पर हो रहा वन विनाश ही है यदि धरती से सिमट रहे वन क्षेत्रों का नवीनीकरण नहीं किया गया और वन विनाश को नहीं रोका गया तो धरती का संरक्षित भाग विनाश के कगार पर चला जाएगा। विश्व में ऐसे अनेक देश हैं जहां वन विनाश के कारण उनका पर्यावरण संतुलन एकदम गड़बड़ा गया है। आने वाला समय इन देशों के लिए पर्यावरण असंतुलन के कारण अनेक कष्टों से भरा होगा जोकि गंभीर रूप से चिंता का एक प्रमुख कारण है। दो प्रदेशों की बर्फ बड़ी तेजी से पिघल रही है ध्रुव प्रदेशों में बढ़ती गर्माहट से वहां की बर्फ बहुत जोरों से पिघल रही है जिससे समुद्री भागों में जलस्तर बढ़ने की बड़ी व्यापक संभावना है इस बढ़ते जलस्तर के कारण कई द्वीप एवं देशीय तटों के समुद्र में डूब जाने की आशंका व्यक्त की जा रही है इसे भू वैज्ञानिकों एवं पर्यावरण विशेषज्ञों ने भारी चिंता व्यक्त की है इसे ग्रुप देशों की शिरपुर वनस्पतियों एवं जीव जंतुओं को अस्तित्व के लिए भारी संकट का सामना करना पड़ सकता है। बर्फ के पिघलने पर अनुसंधान कर रहे वैज्ञानिकों का

कहना है कि गर्मी के मौसम में जो बर्फ पिघलती है वह सन 2050 तक 60% तक पिघल जाएगी जितने लंबे समय तक यह बर्फ जमी रहेगी इतने लंबे समय तक देशों के सफेद रंग के भालू जिंदा रहेंगे क्योंकि इस बर्फ पर वह आसानी से अपना शिकार प्राप्त करते हैं वह भी बर्फ को खोदकर सील मछली को आसानी से अपने पंजों में फंसा लेते हैं इस प्रकार 2 प्रदेशों के भालू का अस्तित्व अब संकटग्रस्त हो गया है।

समुद्री क्षेत्रों का गरमाना- यह एक बहुत बड़े खतरे का संकेत माना जा रहा है कि भूमध्य रेखा के आस-पास के समुद्री क्षेत्रों का तापमान बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है। इस बढ़ते तापमान से समुद्री जीवों का जीवन खतरे में पड़ गया है क्योंकि इस तापक्रम में गत एक शताब्दी में लगभग तीन-चार डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है जो कि उनके लिए असहनीय हैं इतना ही नहीं कुछ प्राणियों का या तो लोप हो गया है या उन्होंने समुद्री क्षेत्र बदल लिया है। समुद्री भागों का गरमाना विश्व की तमाम छोटी-बड़ी घटनाओं में से अत्यंत रहस्य पूर्ण एवं समुद्री जीवों के लिए अत्यधिक खतरनाक है यह एक ऐसा परिवर्तन है जो कि सर्वथा विनाशकारी है। समुद्री भागों को धरती से अपेक्षाकृत ठंडा क्षेत्र माना जाता है लेकिन धीरे-धीरे इसमें गर्माहट बढ़ने से समुद्री प्राणियों में व्याकुलता होने लगी है। धरती पर मानव आबादी का घनत्व लगातार बढ़ता जा रहा है आबादी के घनत्व का प्रभाव नम भूमि पर बहुत पड़ रहा है जिससे प्रदूषण की घटनाएं बढ़ रही हैं साथ ही नम भूमि क्षेत्र का आकार घट रहा है। इस तरह समस्त विश्व से नम भूमि क्षेत्र लुप्त होते जा रहे हैं। धरती पर घटते बढ़ते तापक्रम एवं मौसम परिवर्तन ने मौसम विज्ञान के विशेषज्ञों को आश्चर्य में डाल दिया है। विभिन्न देशों में गर्मियों में अत्यधिक गर्मी, सर्दियों में अत्यधिक ठंड तेज तूफान एवं आंधियां चलना समुद्री ज्वार भाटाओं का अधिक तीव्रता के साथ बढ़ना बर्फीले भागों की बर्फों का तेजी के साथ पिघलना सब मौसम परिवर्तन एवं धरती पर पर्यावरण असंतुलन का संकेत हैं। इसमें समस्त विश्व नागरिक भयावह रूप से प्रभावित हुआ है।



सेवाकालीन प्रशिक्षण

साभार : पर्यावरण शिक्षा

शिक्षा के लिए जीवन का कोई भी काल अप्रासंगिक नहीं होता, क्योंकि व्यक्ति जीवन भर सीखता रहता है- अपने अनुभवों से, पराए अनुभवों से, परिवेश और परिस्थिति से, मानव व्यवहार और पारस्परिक संबंधों से, प्रकृति और मानव रचित प्रक्रियाओं से हर जगह, हर क्षण सीखने को कुछ ना कुछ मिलता ही रहता है। अधिक अनुभवी लोगों के अनुभव का लाभ उठाने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक है। सेवाकाल में भी प्रशिक्षण और ऐसे प्रशिक्षणों की श्रृंखलाएं आज की आवश्यकता है- पर्यावरण शिक्षा पर भी यह बात शत-प्रतिशत लागू होती है

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम : समयबद्ध आयोजन

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक समय सीमा होती है - यही कोई 10 से 15 दिन। इसकी रूपरेखा अत्यंत सावधानी से बनाई जानी चाहिए। प्रशिक्षण की स्वीकृति, प्रतिभागियों का चयन, उनको समय पूर्व सूचना, आगमन का निश्चित समय, आवास की, सुविधा की, प्रशिक्षण की शुरुआत की, दिनांक तथा समय तथा प्रशिक्षण की अवधि सभी कुछ स्पष्ट होने चाहिए ताकि किसी प्रकार की अनिश्चितता ना रहे। ऐसा करने पर कार्य में गंभीरता भी आती है तो सालों की पूर्व तैयारी के साथ आ पाते हैं। प्रशिक्षण के आवश्यक निर्देश तथा आधारभूत सामग्री पूर्व में भी भेजी जा सकती है, पर यदि ऐसा संभव ना हो तो पहले ही दिन इसे उपलब्ध कराना आवश्यक है। प्रशिक्षण कार्यक्रम चाहे 1, 2 या 3 सप्ताह का क्यों ना हो, उसकी रूपरेखा एकदम स्पष्ट होनी चाहिए मोटे तौर पर उसके दो भेद हो सकते हैं- सैद्धांतिक पक्ष और व्यावहारिक पक्ष

सेवाकालीन प्रशिक्षण के विभिन्न रूप

जरूरी नहीं है कि सेवाकालीन प्रशिक्षण आमने-सामने का ही कार्यक्रम हो। एक, दो या तीन सप्ताहों के ऐसे कार्यक्रम प्रभावी अवश्य होते हैं; लेकिन वह एकमात्र तरीका होने का दावा नहीं कर सकते। और भी कई ढंग हैं, जिनसे पर्यावरण चेतना दी जा सकती है। शिक्षण की विभिन्न शैलियां निम्नानुसार हैं

1. पत्राचार कार्यक्रम

प्राथमिक शाला में सामाजिक ज्ञान और सामान्य विज्ञान के समय के रूप को पर्यावरण शिक्षा का नाम दिया गया है राष्ट्रीय शिक्षा नीति में, शिक्षा के मूल तत्व में पर्यावरण के संरक्षण को भी सम्मिलित किया गया है लेकिन अभी तक माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने पर्यावरण शिक्षा के लिए ना तो पाठ्यक्रम तैयार किया है और ना ही कालांश ही आवंटित किए हैं। यह बात राजस्थान के संदर्भ में है। राजस्थान में लाखों विद्यार्थी हैं जिन्हें हजारों अध्यापकों ने पढ़ाते हैं B.Ed अथवा बीएसटीसी करने वालों को तो अपने-अपने प्रशिक्षण संस्थानों में फिर भी पर्यावरण के प्रशिक्षण मिल जाता है, लेकिन शेष शिक्षक अधुनातन ज्ञान कहां से पाएंगे उनके लिए भी तो कुछ किया जाना चाहिए। इस समस्या का समाधान पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से सोचा गया है। पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए भी उपयोगी है, जिन्होंने पहले प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया और उन लोगों के लिए भी लाभदायक है, जिन्हें प्रशिक्षण प्राप्त किए कुछ समय हो चुका हो। ऐसे पत्राचार कार्यक्रमों की रचना की जा चुकी है जो हमें विषय वस्तु के ज्ञान के साथ-साथ क्षेत्र में प्रयुक्त प्रायोजनाओं, क्षेत्रीय अध्ययनों, पृष्ठभूमि की सामग्रियों और अन्य गतिविधियों से परिचित करवाते हैं।

ऐसे पत्राचार कार्यक्रम काफी सफल रहे हैं। इनमें भाग लेने वाले अभ्यर्थियों के उत्तरों का मूल्यांकन होता है तथा अंत में एक प्रमाण पत्र दिया जाता है जो प्रशिक्षण की संपूर्ति का परिचायक है। साथ ही उन्हें आवश्यक पुस्तकें और आधार सामग्री भी दी जाती है।

संचार साधनों से प्रशिक्षण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, एनसीईआरटी दिल्ली तथा राज्यों के शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद होने ऐसे कई कार्यक्रम बनाए हैं, जिनको दूरदर्शन के माध्यम से दिखाया जा सकता है प्रशिक्षण काल में अनुदेशक अथवा व्याख्याता की जिम्मेदारी होती है कि वे उनकी जिज्ञासाओं का शमन करें, जो दर्शकों अथवा श्रोताओं के मनो में उतरे हैं। ऐसे कार्यक्रम सफल हुए हैं और आगे भी सफल होंगे बशर्ते इनका संचालन किसी निस्वार्थ व्यक्ति द्वारा किया जाता हो।

सेवाकालीन प्रशिक्षण का विशेष पक्ष

सेवा पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा का समावेश तो है लेकिन उसे अनेक वैकल्पिक विषयों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह प्रशिक्षणार्थी की इच्छा पर है कि वह इस विषय का चुनाव करें अथवा ना करें। ऐसा कोई निश्चित नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि बीएसटीसी अथवा बी.ई.डी का प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा का भी अध्येता है। इस कमी को सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा किया जा सकता है। ऐसे पैसों में भाग लेने वाले लोग पर्यावरण ज्ञान के लक्ष्य से ही आते हैं, अतः विषय वैकल्पिक अनिवार्य बन जाता है।

वातावरण निर्माण

सेवाकालीन प्रशिक्षण का भी अपना एक वातावरण होता है यदि प्रशिक्षण कार्यक्रम ऐसे स्थानों पर आयोजित किए जाएं जो प्रकृति की गोद में बसे हो, तो सबके मानस पर उनका अमित प्रभाव पड़ता है। अतः बनस्थली जैसे स्थानों में या शिविरों के लिए उपयुक्त समझे जाने वाले स्थानों में प्रशिक्षण दिया जाए। हां, इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि वे स्थान मूल प्रशिक्षण संस्थान/संदर्भ केंद्र से दूर ना हो, ताकि स्वाध्याय, फिल्म प्रदर्शन अथवा अन्य सिद्धांत कार्यों के लिए वहां आया जाया जा सके।

सामग्री निर्माण एवं वितरण

सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए व्यापक तैयारियों की आवश्यकता होती है। विशेषज्ञों द्वारा प्रमाणित सामग्री का निर्माण इसका पहला चरण है। सामग्री के प्रकाशन के बाद कुछ चुने हुए व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे अपने स्तर पर शिविरों का आयोजन कर सके। पूरे राज्य में एक साथ कई शिविर लगाने के लिए पर्याप्त संख्या में संदर्भ व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। किसी भी एक व्यक्ति के लिए भिन्न-भिन्न कुशलता एवं विशेषताओं के चार पांच व्यक्ति चाहिए, ताकि प्रशिक्षण के हर बिंदु के साथ न्याय किया जा सके। प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम के पश्चात प्रशिक्षण कालीन अनुभव पर चर्चा होती है, ताकि भावी कार्यक्रमों में आवश्यक विस्तार अथवा संशोधन किया जा सके। प्रशिक्षणार्थियों से भी अपेक्षा रहती है कि अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर कुछ नया कार्यक्रम शुरू करेंगे तथा उनका फीडबैक मुख्य कार्यालय भेजते रहेंगे। कालांतर में कई प्रशिक्षणार्थियों को भी व्यक्तियों के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है। इस तरह से यह चक्र आगे से आगे चलता रहता है।

प्रशिक्षणार्थी से अल्पावधि में यदि एक चार्ट बनवा लिया जाए तो काफी सामग्री एकत्रित हो सकती है। प्रशिक्षण काल में मन को आह्लादित करने वाले रुचिकर कार्यों के माध्यम से भी पर्यावरण संचेतना उत्पन्न की जा सकती है।

ऐसे कुछ स्थानों का परिभ्रमण भी किया जा सकता है जो शुद्ध एवं मनमोहक पर्यावरण के प्रतीक हों; दूसरी और ऐसे स्थानों को भी चुना जा सकता है, जहां निरंतर जल, मृदा, वायु और ध्वनि का प्रदूषण हो रहा हो, इस प्रकार दोनों के प्रत्यक्ष अंतर को समझाया जा सकता है।

अमृता शेरगिल

साभार : शिखर भारतीय महिलायें



अमृता शेरगिल की गणना पूर्व औपनिवेशिक युग के अत्यंत प्रभावशाली एवं गुणी भारतीय कलाकारों में की जाती है। पेरिस में लगने वाली ग्रैंड सेल में एक एसोसिएट के रूप में चुनी गई वे ना केवल सबसे युवा कलाकार थी बल्कि एकमात्र एशियाई कलाकार भी थी। अमृता शेरगिल के चित्रों में पश्चिमी चित्रकला पद्धतियों की स्पष्ट झलक मिलती है। उनके बनाए गए चित्रों में उनके गहन मनोभाव एवं रंगों का बोध परिलक्षित होता है। उनके चित्रों को देखकर यह भी महसूस होता है कि उस युवा चित्रकार को भारतीय विषयों की गहरी समझ थी।

अमृता शेरगिल का जन्म 30 जनवरी, बुडापेस्ट हंगरी में हुआ था। वे एक कुलीन सिख, संस्कृत एवं फारसी विद्वान उमराव सिंह शेरगिल मजीठिया और हंगरी की एक यहूदी ओपेरा गायिका मेरी अंतोइनेत गॉट्समैन की सुपुत्री थी। वे दो बहनों में बड़ी थी और विराम उनकी छोटी बहन का नाम इंदिरा सुंदरम था, जो समकालीन आर्टिस्ट विवान सुंदरम की मां थी। विवान का अधिकांश बचपन उनके साथ बीता।

सन 1924 में अमृता ने फ्लोरेंस इटली में 'सांता अनसियता' नाम के आर्ट स्कूल में दाखिला ले लिया। हालांकि अमृता इस स्कूल में अधिक समय तक नहीं रहीं और 1924 में भारत लौट आईं। फिर भी यह सच है कि इसी स्कूल में उनका परिचय रिप्लिकेट मानचित्र कारों की कलाकृतियों से हुआ। सन 1938 में अमृता का विवाह उनके हंगेरियन मौसैरे भाई डॉक्टर विक्टर इगान से हो गया। दोनों भारत चले आए और सराया, गोरखपुर उत्तर प्रदेश में अपने पैतृक घर में रहने लगे।

अमृता को 5 वर्ष की उम्र से ही चित्रकारी का शौक था और 8 वर्ष की आयु में उन्होंने औपचारिक रूप से चित्रकारी करने की शिक्षा लेनी शुरू कर दी थी। 1930 में उनका परिवार भारत में समरहिल, शिमला में जाकर रहने लगा था और उन्होंने पियानो तथा वायलिन सीखना शुरू कर दिया था। वे जब 9 वर्ष की थी, इंदिरा और वह शिमला के गेयटी थिएटर में संगीत का कार्यक्रम दिया करती थी। और नाटकों में अभिनय करती थी।

अमृता की माँ ने बहुत जल्दी उनकी प्रतिभा को पहचान लिया और उन्हें चित्रकारी करने के लिए प्रोत्साहित किया। 16 वर्ष की हो जाने पर उनकी मां चित्रकला में उन्हें प्रशिक्षण दिलाने के लिए इटली और पेरिस ले गई जो गतिविधि का अड्डा बना हुआ था और सत्र में शताब्दी से लेकर आने वाले समय में पेरिस ने अनेक ऐतिहासिक कला आंदोलनों को जन्म दिया। वहां उन्होंने पहले तो गैंडि शोमियर में पियरे वैलेंट के अंतर्गत और बाद में इकोले डेस ब्यूक्स आर्ट्स में लूसियन साइमन के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्हें पॉलिसीजेन और पॉल गॉगुइन जैसे यूरोपीय चित्रकारों और बोरिस ताजलित्सकी तथा अन्य कलाकार मित्रों और कला प्रेमियों की संगति में असीम प्रेरणा प्राप्त की।

पेरिस में सर्वश्रेष्ठ आर्ट स्कूल इकोले डेस ब्यूक्स आर्ट्स अमृता को महान चित्रकारों के मार्गदर्शन में अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां रहते हुए उन्हें कलादीर्घाओं, संग्रहालय तथा म्यूजियम, सेल हाथी देखने का भी अवसर मिला, जो उनके बहुत काम आया। प्रारंभ में उन्होंने प्रमुख समकालीन एवं प्राचीन चित्रकारों की कलाकृतियों का अध्ययन किया।

पेरिस में एक विद्यार्थी के रूप में ज्ञानार्जन करते हुए उन्हें भारत लौटने की उत्कृष्ट इच्छा ने कचोटना शुरू कर दिया, क्योंकि उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि एक चित्रकार की हैसियत से उनके भाग्य का तार कहीं ना कहीं भारत से जुड़ा हुआ है।

उनके चित्रों में पश्चिमी चित्रकला पद्धतियों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता था, विशेषकर वे पद्धतियां, जिनका अनुसरण 1930 के दशक के आरंभिक काल में पेरिस के बोहेमियाई समुदायों में किया जा रहा था। 'यंग गर्ल्स' उनकी पहली महत्वपूर्ण कलाकृति थी। जो उन्होंने सन 1933 में बनाई थी और जिसकी वजह से उन्हें पेरिस में ग्रैंड सेल में एक एसोसिएट के रूप में चुना गया था। यह सम्मान पाने वाली अब तक की सबसे युवा एवं एकमात्र एशियाई महिला चित्रकार थी।

सन 1934 तक यूरोप में रहते हुए उनके द्वारा किया गया कार्य अधिकतर शैक्षिक प्रकार था, जिसमें जड़ पदार्थों का चित्रण, नग्न चित्रों का अध्ययन, व्यक्ति चित्र बनाना और इसी तरह के अन्य कार्य शामिल थे। वह किसी विदेशी पर्यटक के रूप में भारत नहीं आई, जो भारत के 'अतीव सौन्दर्य' और मोहक दृश्य एवं लुभावनी महक के कारण खिंचा चला आता है, बल्कि एक भारतीय के रूप में, भारतीय भावनाओं से ओतप्रोत और मन में यह निश्चय लेकर आई कि इस भूमि को उन्हें अपना घर बनाना है। इस तथ्य के बावजूद कि उन्होंने पाश्चात्य कला में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, भारत की कलात्मक परंपराओं की पूरी समझ उन्हें थी और उन परंपराओं के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान था।

शायद भारत लौटने के बाद ही उनकी प्रतिभा को खिलना था। नवंबर 1934 में जब उन्होंने पहली बार भारत की मिट्टी पर अपने कदम रखे, उनके मन पर दुखी, उदास, निर्धन और कंगाल भारतीयों के चेहरे छा गए, जिन्हें उन्होंने पहले तो शिमला के इर्द-गिर्द देखा, फिर दक्षिण भारत में और अंततः पंजाब में। सन 1935 के शुरू शुरू में शिमला में बस जाने के बाद उन्होंने भारतीयों के जीवन विशेषकर दरिद्र लोगों के जीवन को चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। उन्हें पता था कि निकट भविष्य में उन्हें क्या हासिल होने वाला है। उन्होंने भारतीय कला परंपराओं को पुनः खोज निकालना शुरू कर दिया और यह सूचना उनकी मृत्यु तक जारी रहा।

सन 1936 में एक कला संग्राहक एवं समीक्षक कार्ल खंडेलवाल ने उन्हें प्रोत्साहित किया कि वे भारत में जोहदड़ों को खोजने की अपनी उमंग को जारी रखें। बाद में मुगल और पहाड़ी चित्रकला पद्धतियों और अजंता के गुफा चित्रों ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। तदंतर उन्होंने सन 1937 में दक्षिण भारत का भ्रमण किया और प्रसिद्ध दक्षिण भारतीय चित्र - त्रयी प्रस्तुत की - ब्राइड्स टॉयलेट, ब्रह्मचारी और द साउथ इंडियन विलेजर्स।

उनका भावप्रवण रंगबोध और उनकी भारतीय विषयों के लिए उतनी ही भावप्रवण परानुभूति चित्रों की इस श्रेणी में देखी जा सकती है, जिसमें भारतीय लोगों की गरीबी और निराशा को बखूबी दर्शाया गया है। उन्होंने माना कि अपने कार्य में जो रूपांतरण करना चाहती थी, वह पूरा हो गया और यह भी कि उन्होंने अपनी 'कला का उद्देश्य' पा लिया है, वह उद्देश्य है- अपने विश्लेषण के माध्यम से भारतीय लोगों के जीवन को अभिव्यक्त करना।

सन 1938 में उनके चित्रकला का दूसरा चरण कब शुरू हुआ, जब अमृता अपने पति के साथ उत्तर प्रदेश, भारत में बस गई। उसी समय के उनके चित्रों की भावाभिव्यक्ति भारतीय आधुनिक कला आंदोलन के अग्रज रविंद्र नाथ टैगोर और जामिनी राय के साथ कदम बढ़ाती हुई प्रतीत होती है। सन 1941 में दोनों पति-पत्नी लाहौर चले गए, जो तब अविभाजित भारत में था और एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं कला केंद्र माना जाता था। वहां उनका निवास 23, गंगाराम मैशंस, दि मॉल, लाहौर में था। वहां उनका स्टूडियो एकदम ऊपर की मंजिल पर था।

उनकी कलाकृतियों को भारत सरकार द्वारा बहुमूल्य 'राष्ट्रीय कला संग्रह' के रूप में मान्यता दी गई है। उनमें से अधिकतर चित्र नई दिल्ली में 'राष्ट्रीय आधुनिक कलादीर्घा, (नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट) में रखे हुए हैं। अमृता के बनाए गए चित्र 'हिल वीमेन' अर्थात् 'पहाड़ी स्त्रियां' को लेकर सन 1978 में एक 'स्मारक डाक टिकट' जारी किया गया और दक्षिणी दिल्ली में एक सड़क का नाम 'अमृता शेरगिल मार्ग' रख दिया गया।

बहुत से समकालीन भारतीय कलाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहने के अलावा, अमृता के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने 'तुम्हारी अमृता' नामक एक नाटक के मंचन को भी प्रेरित किया, जैसे सन 1993 में एक मशहूर उर्दू कलाकार जावेद सिद्दीकी ने लिखा था। इस नाटक में शबाना आजमी और फारूक शेख ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। उनके बनाए कुछ चित्र निजी कला संग्रहाको के खजाने में भी शामिल हैं। इन कलाकृतियों को हासिल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय नीलामी में बहुत ऊंची बोलियां लगती हैं।

लाहौर में रहते हुए अमृता शेरगिल ने 5 दिसंबर, 1941 की आधी रात को अंतिम सांस ली और 7 दिसंबर, 1941 को लाहौर में ही उनका दाह संस्कार कर दिया गया।

कष्ट और विपत्ति मनुष्य के लिए शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं।
जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।

अनमोल शिक्षाएं

साभार : सचित्र लोककथा कोष

हिमाचली लोक कथा

एक बार एक राजा ने अपने बेटे की किसी बात से नाराज होकर उसे देश- निकाला दे दिया। चलते समय उसे केवल तीन लाख रूपये दिये। राजकुमार उन रुपयों को लेकर अपनी किस्मत आजमाने चल पड़ा। जैसे ही वह एक जंगल में से गुजरा तो साधू ऊंची आवाज में कह रहा था ' एक लाख में अनमोल सीख, एक लाख में अनमोल सीख'। उसकी बात सुनकर राजकुमार रुकने पर विवश हो गया। वह सोचने लगा कि आखिर एक लाख मूल्य की कौन-सी सीख होगी। उसने साधु को एक लाख रूपया दिया तो साधु ने उसके कान में कहा, 'बेटा - कभी किसी के बिस्तर को झाड़ने से पहले सोना नहीं चाहिए'

राजकुमार मन ही मन उसे याद करता हुआ आगे बढ़ने लगा। तभी उसे साधु ने कहा ' मेरे पास 200000 की दो अनमोल सीखे और हैं। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें वे दोनों भी दे सकता हूं'

राजकुमार को साधु की बात पर यकीन हो गया था, अतः उसने बचे दो लाख भी साधु को दे दिए। साधु ने फिर राजकुमार के कान में कहा ' अजनबी लोगों के हाथ से कभी कुछ ना खाना। तीसरी बात यह कि जब तक तुम्हारे पास पैसा है, तभी तक तुम्हारे रिश्तेदार तुम्हारे हैं।'

तीन लाख रूपये के बदले में तीन अनमोल शिक्षाएं लेकर राजकुमार आगे बढ़ा। अब उसके पास एक आने कौड़ी भी नहीं थी, किंतु उसके पास हिम्मत थी और बुद्धि भी।

रात हो जाने पर वह ठहरने के लिए कोई स्थान देखने लगा तो उसे एक झोपड़ी दिखाई दी। राजकुमार ने जाकर दरवाजे पर दस्तक दी। एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला और राजकुमार को भीतर बुला लिया। बुढ़िया ने एक ओर बिछे बिस्तर की ओर इशारा करके उसे सोने के लिए कहा।

राजकुमार ज्यों ही उस पर बैठने लगा, त्यों ही उसे साधु की पहली सीख याद आ गई। उसने बिस्तर झाड़ा तो वह भौचक्का रह गया। चारपाई में एक गड्ढा था और गड्ढे के नीचे गहरी खाई थी। दरअसल वह बुढ़िया एक डायन थी जो उसे मार कर खाना चाहती थी। राजकुमार ने तत्काल उसका सर अपनी तलवार से काट दिया और आगे चल पड़ा। आगे एक बस्ती थी। सबसे पहले जो झोपड़ी पड़ी, उसमें एक बुढ़िया और उसकी बेटी रहते थे। राजकुमार ने वहां ठहर कर रात गुजारनी चाही तो उन्होंने उसका स्वागत किया। उन्होंने उसे खाना खाने को दिया। राजकुमार जैसे ही करने लगा, वैसे ही उसे साधु की दूसरी सीख याद आ गई। राजकुमार ने पास में बैठी बिल्ली को थोड़ा सा खाना खिलाया तो बिल्ली ने वही प्राण छोड़ दिये। एक बार फिर साधु की सीख ने राज कुमार के प्राण बचा लिये।

अब राजकुमार उस नगरी की ओर चल दिया, जहां उसकी बहन रहती थी, किंतु साधु ने तो उसे पहले ही बता दिया था कि पैसा रहते ही रिश्तेदार अपने होते हैं। राजकुमार तो इस समय राज्य से निर्वाचित था, अतः संदेश मिल जाने के बावजूद भी राजकुमार की बहन उससे मिलने नहीं आई। इस बात ने राजकुमार के मन को गहरा धक्का पहुंचाया। दुखी मन से वह आगे बढ़ा। जिस नगर में राजकुमार पहुंचा, वहां के राजा की थोड़े दिन पहले ही मृत्यु हो गई थी। वह राजा निसंतान मर गया था, अतः वहां के निवासी एक नए राजा की प्रतीक्षा में थे। इसके लिए उन्होंने एक शाही हाथी को खूब सजाकर राजमार्ग पर छोड़ दिया था। राजा बनने की शर्त यह थी कि जिस व्यक्ति को शाही हाथी अपनी पीठ पर सवारी करा देगा, वही नया राजा होगा। जैसे ही हाथी ने राजकुमार को आते देखा, वैसे ही उसने अपनी सूंड से उसे उठाकर अपने ऊपर बिठा लिया। राजकुमार यह सब देखकर बहुत हैरान हुआ। जब हाथी उसे राज महल में ले गया तो सभासदों ने उसका राज्य अभिषेक कर दिया।



लीडरशिप पर पड़ता तकनीक का प्रभाव

साभार: बच्चों में लीडरशिप

आज का समय ई-लर्निंग का है। आज बाजार में कई तरह के गैजेट्स मौजूद हैं, जिन्हें बच्चे लेना चाहते हैं। पर बहुत सारे ऐसे बच्चे भी हैं, जो गैजेट्स के सही प्रयोग के बारे में नहीं जानते। स्कूल में कंप्यूटर की पढ़ाई तो होती है, पर गैजेट्स के बारे में जानकारी नहीं दी जाती। इसलिए मोबाइल फोन का प्रयोग गाने सुनने, फोटो खींचने के लिए होता है। बच्चे यह सब करके खुश होते हैं। अब तो मोबाइल में इंटरनेट की सुविधा भी है। पर यहाँ इसका प्रयोग फेसबुक या फिल्म देखने के लिए होता है। मैंने बहुत से ऐसे बच्चे देखे हैं, जो फोन का प्रयोग चैटिंग के लिए करते हैं; जबकि इसका अच्छा प्रयोग पढ़ाई-लिखाई और समस्या समाधान के लिए हो सकता है।

बच्चे टेक्नोसेवी हो गए हैं। बहुत अर्थों में यह फायदेमंद है और बहुत बार यह हानिकारक भी होता है, खासकर जब माता-पिता बच्चों पर ध्यान नहीं देते और बच्चों को दिशा देनेवाला कोई नहीं होता। आजकल एक छोटे से मोबाइल में हर तरह की चीजें हैं, जैसे- इंटरनेट, फोन आदि। उनको यह समझाना बेहद जरूरी है कि किसका प्रयोग कैसे करें। मोबाइल का फायदा कैसे लें। मान लीजिए, बस में बैठे-बैठे आपको कोई बात याद आई, कोई जरूरी काम याद आया: आपने तुरंत अपने मोबाइल में फीड कर लिया। स्कूल की फीस से लेकर टेस्ट कब होगा, कैसे पढ़ना है, सब रिमाइंडर में लगा लीजिए।

दरअसल यह जेनरेशन डिजिटल जेनरेशन है। इस जेनरेशन के बच्चे खेल के मैदान में न जाकर घर पर बैठे रहना पसंद करते हैं। इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, चैटिंग ये सब ऐसी चीजें हैं, जो हमेशा दोस्तों को करीब रखती हैं। इस तरह बच्चे वर्चुअल दुनिया में जीने के आदी हो जाते हैं। उन्हें अपने दोस्तों से मिलने के लिए घर से बाहर नहीं जाना पड़ता। माता-पिता यह महसूस कर रहे हैं कि बच्चे इंटरनेट पर ज्यादा-से-ज्यादा देर बैठे रहते हैं। दिन के समय वे इंटरनेट का ज्यादा प्रयोग करते हैं, क्योंकि माता-पिता अपने कामकाज के सिलसिले में घर से बाहर रहते हैं। यह कहने का अर्थ यह नहीं कि तकनीक का प्रयोग करना या फिर अपने दोस्तों के संपर्क में रहना हानिकारक है। हाँ, लेकिन इसका दूसरा पहलू भी ध्यान देने योग्य है। इंटरनेट में ऐसी कई साइट्स हैं, जो सिर्फ वयस्कों के लिए हैं। माता-पिता इस बात से चिंतित हैं कि अधिकांश बच्चे इस तरह की साइट्स को ज्यादा देखते हैं। इंटरनेट में इस समय पोनोग्राफी की 5 लाख हजार से ज्यादा साइट्स हैं। हर दिन लगभग 60 प्रतिशत बच्चे इस तरह की साइट्स में विजिट करते हैं, फंडामेंटल एक्शन साइट्स या गेम साइट्स पर भी बच्चे विजिट करते हैं, जो बच्चों को हिंसा के लिए उकसाती हैं। तेजी से बदल रही दुनिया के लिए यह एक खतरनाक संकेत है, जो उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं, खासकर पोर्न साइट्स। बच्चे कुछ और साइट्स देखते हैं, लेकिन देखते-देखते वे पोर्नोग्राफिक साइट्स देखने लगते हैं। यहाँ सवाल यह भी उठता है कि इंटरनेट के दुरुपयोग से बच्चों को कैसे रोका जाए? उनकी सुरक्षा कैसे की जाए? यह देखते हुए कि बच्चा गलत जगह पर क्लिक कर रहा है, अपने गुस्से पर नियंत्रण रखें। जब वह इंटरनेट देख रहा हो, उससे बहुत सहज और दोस्ताना होकर बातचीत करें। साइबर कैफे जाते समय उनके साथ किसी बड़े का होना जरूरी है। यह बताना बहुत जरूरी है कि कितना और क्या जानना जरूरी है और क्या जानना जरूरी नहीं है। बच्चे खुद में जागरूक होते हैं, पर उनका सही मार्गदर्शन करनेवाला तो होना ही चाहिए। यह बहुत जरूरी है कि माता-पिता अपने बच्चों के ऑनलाइन व्यवहार पर निगरानी रखें। जब भी लगे कि वह ऐसी चीजें देख रहा है, जो हानिकारक हैं तो उसे समझाएं।

बच्चे के सामने ऑनलाइन पॉजिटिव चीजों के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा बात करें। ऐसी साइट्स के बारे में बताएँ, जिससे उसका ज्ञान बढ़े। वे अपनी रचनात्मकता को बढ़ाएँ। उसके साथ अच्छी साइट्स खोजने में मदद करें। खुद भी रुचि लें। बच्चों के सही मार्गदर्शन के लिए तकनीक एक बहुत बड़ा रास्ता तय करती है। कंप्यूटर सार्वजनिक स्थल पर रखें। इंटरनेट का प्रयोग करने के लिए समय-सीमा तय करें। सॉफ्टवेयर की सिक्योरिटी अप-टू-डेट रखें। बच्चे से इंटरनेट के जरिए पर्सनल बातचीत जारी रखें। चेक ब्राउजर हिस्ट्री से देखें कि बच्चे ने क्या-क्या सर्च किया।

एक शोध के अनुसार, फेसबुक का बढ़ता चलन बच्चों में डिप्रेशन यानी अवसाद को बढ़ावा देता है। हाल ही में हुए एक शोध से इस बात का खुलासा हुआ है कि फेसबुक पर बच्चे पिकनिक, पार्टी और मौज-मस्ती की ही तस्वीरें अपलोड करते हैं। जबकि वे बच्चे, जो इन चीजों से वंचित हैं, इन अपडेट्स को देखकर हीन भावना और अवसाद के शिकार हो जाते हैं। डॉक्टरों के एक समूह का मानना है कि अगर समय रहते माँ-बाप ने बच्चों की इंटरनेट सर्फिंग की आदत पर नियंत्रण नहीं किया तो बच्चे अवसाद का शिकार हो सकते हैं। अवसाद की इस बीमारी को किसी विशेष श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। शोध टीम के प्रमुख और बोस्टन में बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. ग्वेन ओ. कैफी का कहना है कि फेसबुक का प्रभाव एक कठोर सामाजिक परिदृश्य बनाता है, जिससे वे बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिनमें आत्मसम्मान की कमी होती है।

डॉक्टरों का कहना है कि फेसबुक पर बच्चे अपने ऐसे अपडेट और तस्वीरें लगाते हैं, जिनमें वे दिखाते हैं कि उन्होंने क्या मस्ती की। ऐसा देखने वाला बच्चा अगर जरा सा भी दुःखी है तो इससे उसका तनाव तेजी से बढ़ता है। ऑनलाइन अपडेट में बच्चे घटना की वास्तविकता और उसकी भूमिका को समझ नहीं पाते। कंप्यूटर पर खेल खेलने के शौकीन बच्चे मोटापे का शिकार हो जाते हैं। कभी-कभी उन पर गुस्सैल और हिंसक प्रवृत्ति के होने का आरोप भी लगाया जाता है।

ब्रूनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्पोर्ट्स एंड एजुकेशन के शोधकर्ताओं के मुताबिक, ऑनलाइन गेम खेलने से बच्चों की सीखने की क्षमता बढ़ती है। उनमें एक ही उद्देश्य के लिए मिल-जुलकर काम करने की समझ विकसित होती है। शोधकर्ताओं का मानना है कि ऑनलाइन गेम के सोशल नेटवर्क से युवा प्रबंधन कौशल का गुण सीखते हैं, जो उनकी जिंदगी की राह में आनेवाली तमाम समस्याओं से निपटने में उनकी मदद करती है।

इससे पहले इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट के अध्ययन में कहा गया कि अकसर इन गेम्स को खेलते समय प्लेयर्स लीड लेने की कोशिश करते हैं। इससे वे अलग-अलग स्वभाव के लोगों को आसानी से समझ सकते हैं और उन्हें एक निश्चित दिशा में काम करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इससे किसी की योग्यता को भी आसानी से परखा जा सकता है। गेम्स के शौकीन किसी मुद्दे पर फैसला तुरंत लेते हैं। इससे उन्हें असफलताओं से निपटने में मदद मिलती है और वे टीम भावना से काम करना सीखते हैं। टोरंटो बेस्ड स्टडीज इन मीडिया एंड इन्फॉर्मेशन लिटरेसी एजुकेशन (एस.आई.एम. आई.एल.ई.) के अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि ऑनलाइन गेम्स से मूड को फ्रेश रखा जा सकता है। इससे बोरियत और तनाव भी दूर होता है। न्यूयार्क में यूनिवर्सिटी ऑफ रोचेस्टर के अध्ययन के अनुसार, इससे युवाओं का हौंसला बढ़ता है और उनमें नई-नई मंजिलें तय करने, आजादी हासिल करने और समाज के साथ जुड़ाव महसूस करने की भावना विकसित होती है।

केवल यही नहीं एक अन्य अध्ययन के अनुसार जिन लोगों ने एक महीने तक दिन में कुछ घंटों के लिए वीडियो गेम्स खेला, आँखों के टेस्ट के दौरान उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई। वे एक निश्चित दूरी पर लगे चार्ट का एक-एक अक्षर आसानी से पढ़ते चले गए। अमेरिका की व्हीलिंग जेसूट यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर ब्रायन रॉडनबुश ने खुलासा किया है कि वीडियो गेम्स खेलने से मरीज या किसी भी इंसान को अपना दर्द भूलने में मदद मिलती है। इससे मरीज के इलाज में आसानी होती है।

इससे टीम वर्क की भावना आती है और वे ज्यादा मेहनत से काम करने लगते हैं। ऑनलाइन गेमिंग का ही असर है कि कई कंपनियों में चीफ गेमिंग अफसर के पद पर नियुक्ति की जा रही है। कई देशों की सेनाओं ने भी ऑनलाइन गेमिंग की अहमियत को पहचाना है। कॉर्पोरेट वर्ल्ड भी अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए इसी तकनीक का सहारा ले रही है।

इन गेम्स की तुलना शतरंज से की जा सकती है, क्योंकि दोनों ही तरह के खेलों से आप रणनीति बनाने की कला में माहिर हो जाते हैं और समस्याओं को जल्द-से-जल्द सुलझाते हैं। इस तरह के गेम्स में काफी स्पीड की जरूरत तो होती ही है, इससे जीवन-शैली को बेहतर बनाया जा सकता है। इन गेम्स के दीवानों को एकाग्रता की कमी का सामना नहीं करना पड़ता। उन्हें सब कुछ आसानी से याद हो जाता है। इसके अलावा उनके विचार और प्रतिक्रिया में समानता होती है। 45 मिनट या 1 घंटे तक वीडियो गेम्स खेलना फायदेमंद हो सकता है, लेकिन कई-कई घंटे वीडियो गेम्स खेलते रहना शरीर और दिमाग के लिहाज से अच्छा नहीं है। कहने का अर्थ यह है कि माता-पिता को यह देखना जरूरी है कि बच्चे टेक्नोलॉजी का प्रयोग किस तरह से कर रहे हैं।



किसी विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक गुलामी है।

वाल्टर चेनिंग

प्रदूषित आवास: बरबादी की ओर बढ़ते कदम

साभार: पर्यावरण शिक्षा

भारत के इतिहास पर एक दृष्टि दौड़ाएं तो सिंधु सभ्यता और नगर-योजना के बारे में मोहनजोदड़ो हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, सुरकोतदा और बनवाली जैसे क्षेत्र सामने आते हैं जहाँ नगरों की सड़कें विभिन्न गृह-समूहों में विद्यमान थीं, जल का निकास सड़कों के साथ-साथ बनी नालियों से किया जाता था, नालियाँ ढंकी हुई होती थीं, शहरों में साफ-सफाई उच्च श्रेणी की थी। लेकिन जैसे-जैसे शहरीकरण और औद्योगीकरण होने लगा तो स्वाभाविक रूप से आवास-नियोजन की परिकल्पना में समूचा अंतर आ गया। प्राचीन काल में जहाँ छोटे-छोटे नगरों एवं जनपदों का निर्माण हुआ करता था, वहीं आज मानो महानगरों का युग चल रहा है। मानव को सदा से ही अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आय के उचित साधनों की तलाश रही है और अपने भोजन की तलाश में वह सदा से ही इधर-उधर भटकता फिरा है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों ने जब शहरों की ओर पलायन किया तो नगरों का विस्तार बढ़ने लगा; परिणाम- स्वरूप नगरीय आवश्यकताओं में भी वृद्धि होती चली गई और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का दोहन भी अपनी सीमा को पार करता चला गया। प्रकृति के इस अप्राकृतिक दोहन को जरूरत से ज्यादा खर्च कर डालने जैसा कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। प्राचीन नगर जहाँ व्यवस्थित रूप से बसे हुए थे, वहीं आधुनिक नगर अव्यवस्थित रूप से बसकर महानगरों का रूप लेने लगे हैं। नगरों एवं महानगरों की इसी अव्यवस्था ने आज हमारे सामने विभिन्न आयामों में प्रदूषण की समस्याएँ ला खड़ी की हैं। इस प्रकार पूर्व काल में नगर जहाँ सभ्यता एवं संस्कृति का केंद्र माना जाता था, अब वही नगर आज प्रदूषण का केंद्र माना जाने लगा है।

नगरों के विकास का कारण भी यही है कि जो सुविधाएँ यहाँ आम तौर से मिलती हैं, उनका ग्रामीण अंचल में सदा अभाव रहा है। स्वतंत्रता- पूर्व जो भारत गाँवों का देश कहलाता था, आज वही शहरों का भारत हो गया है। यहाँ शहरी आबादी गाँवों की आबादी की तुलना में चार गुना बढ़ गई है। शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन व्यवसाय आदि मूलभूत आवश्यकताओं ने जहाँ ग्रामीणों को शहरों में आने को विवश किया है, वहीं यहाँ लगने वाले कल-कारखानों तथा उद्योगों ने अधिक धनोपार्जन के सपने बिखेरकर उन्हें इस ओर आकर्षित किया है। पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध ने भी हर किसी को शहरों में ही रहने बसने को विवश किया है। कुल मिलाकर इन सब कारणों से प्रतिवर्ष 50 लाख ग्रामीण शहरों में आकर बसने लगे हैं। पारिस्थितिकी के असंतुलन से हर वर्ष आनेवाले अकाल एवं बाढ़ ने भी ग्रामीणों को अभावग्रस्त बना दिया है। ऐसे ग्रामीण भी रोजगार की तलाश में निरंतर शहरों में आकर बसने लगे हैं।

नगरों में क्षमता से अधिक जनसंख्या बढ़ने से, अन्यान्य समस्याओं में से मुख्य आवास की समस्या हर किसी के सामने आ खड़ी हुई है। शहरों में आवास समस्या ने शासन, प्रशासन तथा अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के सम्मुख एक चुनौती-सी खड़ी कर दी है। पहले से उपलब्ध मकानों की कमी और बसने वाले लोगों की अधिकता के कारण मकान के किराए भी आसमान को छूने लगे हैं। परिणामस्वरूप हर कोई ऐसी आवास-व्यवस्था चाहने लगा है, जिसकी पूर्ति उसकी जेब कर सके। ऐसी स्थिति में बहुतेरे लोगों को अपने रहन-सहन और जीवन-स्तर से नीचे भी गुजारा करते देखा गया है। नगरों एवं महानगरों में आवासीय समस्या को अपने स्तर पर सुलझाने के प्रयास में निम्न मध्यम एवं निम्न वर्ग ने झुग्गी सभ्यता को जन्म दिया, तो मध्यम वर्ग के बड़े परिवार भी एक ही कमरे के घरों तक सिमटकर रहने पर विवश हो गए हैं।

इन तंग बस्तियों और झुग्गी-झोंपड़ियों के समूहों ने अनेक समस्याओं को तो जन्म दिया ही है, समूचे पर्यावरण को भी प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सरकार एवं प्रशासन द्वारा किए जा रहे अनेकानेक प्रयासों के बावजूद महानगरों में इन झोपड़-पट्टियों की समस्याओं एवं उनमें व्याप्त प्रदूषणकारी गति विधियों पर नियंत्रण की संभावनाएँ भविष्य में भी कम ही नजर आती हैं।

महानगरों के प्रदूषित वातावरण में स्थापित इन झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने- वालों की संख्या तीन करोड़ से भी अधिक आंकी गई है। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, मद्रास जैसे महानगरों में एक-तिहाई आबादी इन्हीं गंदी और तंग बस्तियों के प्रदूषित वातावरण में पशु के समान जीवन व्यतीत करती है।

ऐसी स्थिति में गाँवों से पलायन कर नगरों में उदरपूर्ति के लिए आए मजदूर जो विभिन्न कल-कारखानों में श्रमिकों के रूप में काम करते हैं या रिक्शा चलाने, छोटी-मोटी मजदूरी करने तथा फुटपाथ पर भांति-भांति की वस्तुओं के बेचने का कार्य करते हैं उन लोगों की आमदनी सामान्यतः उतनी नहीं हो पाती, जितनी सामान्य रूप से जीवन-यापन के लिए एक व्यक्ति की होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में अधिक मकान किराया देकर रहने के लिए बेहतर स्थान प्राप्त करना उनकी सीमा से बाहर की बात होती है और तंग बस्तियाँ ही उनके आश्रय का एकमात्र स्थान होती हैं। इस प्रकार दो-चार झोंपड़ियों से घिरा स्थान धीरे- धीरे पूरे मुहल्ले बस्ती का रूप ले लेता है, जहां न तो खुली गलियाँ होती हैं और न घरों में हवा और रोशनी के लिए उचित स्थान ही छोड़ा होता है। नालियाँ न होने की वजह से गंदा पानी तथा कूड़ा-कचरा घरों के बाहर ही बिखर-बिखरकर सड़ता रहता है। ऐसे स्थान प्रायः बदबूदार होते हैं, क्योंकि यहाँ शौचालय का उचित स्थान भी नहीं होता और न ही मल-मूत्र की निकासी का उचित प्रबंध होता है। ऐसे व्यक्ति गरीबी और अशिक्षा के कारण शरीर की साफ-सफाई पर उचित ध्यान भी नहीं देते। इसके लिए उन्हें पर्याप्त रूप में पानी नहीं मिलना भी एक बहुत बड़ा कारण हो सकता है। इन्हें पीने के लिए थोड़ा-बहुत पानी जो उपलब्ध होता है, वह भी शुद्ध नहीं कहा जा सकता। भोजन के नाम पर, सायं तक जैसे-तैसे कमाए गए थोड़े-से रुपयों से जो भी अच्छा-बुरा, सड़ा-गला खाने को मिल जाए, खा-पी लेते हैं। कुल मिलाकर ये सभी कारक एक ओर तो नगर के पर्यावरण को दूषित करने में सहायक बनते हैं, दूसरी ओर उनके निजी स्वास्थ्य को भी बुरी तरह प्रभावित करते हैं।

आवासीय सुविधा से वंचित इन बस्तियों में रहनेवाले व्यक्तियों के बालक भी भविष्य के अंधकार में इधर-उधर भटकते रहते हैं और बालपन से ही काम की आदत डालते हुए कूड़ा-करकट बीनते रहते हैं। इन बस्तियों के इर्द-गिर्द गंदे नालों को बहते भी देखा जा सकता है, जहाँ शहर भर की गंदगी बहती रहती है। इन स्थानों पर चूहों, सूअरों, पिल्लों आदि की भरमार रहती है। ईंधन के नाम पर इनकी गृहणियाँ कागज, कपड़े और गीली लकड़ियों आदि का उपयोग करती हैं, जिससे वायु प्रदूषण फैलता है और सबका स्वास्थ्य बुरी तरह से प्रभावित होता है।

भारत के औद्योगिक नगर कलकत्ता, मुंबई, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, अहमदाबाद आदि में अधिकांश नागरिक आकाश के नीचे सोते हैं। यही कारण है कि भारत के 10 लाख से ज्यादा आबादी वाले महानगरों की संख्या 12 से बढ़कर 20 हो गई है। कलकत्ता और मुंबई की आबादी एक करोड़ से ऊपर आंकी गई है। जब सरकार झुग्गी-झोंपड़ियों को हटाने की योजना बनाती है, तो इन लोगों के आराम का कोई स्थान बाकी नहीं बचा रहता। वर्षा के दिनों में उन्हें बिना निद्रा के रात्रि व्यतीत करनी पड़ती है। इससे इनके व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। गंदी बस्तियों में, एक ही झोंपड़े में परिवार के 8-10 सदस्य तक रैन- बसेरा करते हैं। वह झोंपड़ी ही इनके लिए रसोईघर, स्नानागार और शयन कक्ष का कार्य करती है। इस प्रकार शहरी संस्कृति का बढ़ता आकर्षण अब जल, वायु एवं ध्वनि-प्रदूषण के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों और आदर्शों के हास में भी सहायक होता जा रहा है।

भारत के 3145 शहरों में गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन करते ये मजदूर विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त हैं। शहरों में फैलने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए वैसे भी हरित क्रांति का कोई चिह्न नजर नहीं आता। जहाँ कहीं भी थोड़े- बहुत पेड़-पौधे उपलब्ध हैं, उन्हें काटकर ये मजदूर अपने लिए आवासीय स्थलों का जुगाड़ करते हैं।

शहरों में खाली स्थान उपलब्ध न होने के कारण यहाँ प्रातः भ्रमण जैसा दैनिक कार्यक्रम देखने को नहीं मिलता। परिवहन और यातायात के सभी साधन- वाहनों द्वारा दिन-भर में न जाने कितना विषैला धुआं छोड़ा जाता है, जो प्रत्यक्ष रूप से सड़कों के किनारों पर निवास करने वाले इन निम्न वर्गों के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालता है।

उचित आवास के अभाव में पनपी इन तंग बस्तियों की समस्या केवल विकासशील देशों के लिए ही नहीं, अपितु विकसित देशों के लिए भी चिंता का विषय बनी हुई है। इसका कारण भी यही है कि औद्योगीकरण एवं विज्ञान के विविध आयामों ने जहाँ एक ओर मालिकों को धनाढ्य बना देने का वरदान दिया है, वहीं मजदूरों एवं गरीबों को कूड़े के ढेर पर जिंदगी जीने का अभिशाप भी दिया है। लंदन तथा अमेरिका जैसे बड़े राष्ट्रों के महानगर भी इन प्रदूषित बस्तियों से अछूते नहीं रहे हैं।

गंदी बस्तियों का विस्तार एक साजिश के रूप में

आज झुग्गी-झोंपड़ियों में बसने वाली जनसंख्या अभावों से पूर्णतः ग्रस्त है, लेकिन अमीर लोग उनकी आर्थिक कमजोरी का फायदा उठाकर 'शहरी भूमि हदबंदी कानून' को ताक पर रखते हुए आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु उन्हें साधन के रूप में काम ले रहे हैं। जिनके पास जमीन ज्यादा थी, उन्होंने झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले लोगों के बीच इसका बाँटवारा कर दिया और भूखंडों को बेच दिया। ये लोग प्रदूषण को बिगाड़ने वाले स्तंभ बनकर कभी झोंपड़ियों को हटने नहीं देते। शहरी भूमि हदबंदी कानून से बचने के लिए, राजनीतिक आशीर्वाद प्राप्त कर ये लोग ज्यादा कमाई करने हेतु गंदी बस्तियों की संख्या बढ़ाने को प्रोत्साहन देते हैं। दूसरी ओर उद्योगों के कर्णधार पूंजीपति लोग अपने उद्योगों के आधारभूत श्रमिकों के लिए कभी भी उचित आवास का प्रबंध करने को तैयार नहीं होते। परिणाम- स्वरूप कल-कारखानों में काम करनेवाले श्रमिक वर्ग को इन्हीं तंग बस्तियों में रहने की साजिश झेलनी पड़ती है।

शहरीकरण से प्रदूषण सीमा पार कर रहा है

श्रमिक, लिपिक, महिलाएं, बच्चे तथा विद्यार्थी अपने-अपने गंतव्य स्थानों पर पहुँचने और लौटने के लिए वाहनों का सहारा लेते हैं। महानगरों एवं छोटे शहरों में परिवहन निगम की बसों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। ये बसें पूरे भारत के बड़े नगरों में लगभग 5 करोड़ लोगों को प्रतिदिन ढोती हैं। दिल्ली व कलकत्ता में प्रति 5 मिनट में 15 बसें चलती हैं। ये बसें डीजल का ऊर्जा के रूप में प्रयोग करती हैं। डीजल का धुआं वायु प्रदूषण फैलाता है। वाहनों एवं कल- कारखानों का धुआं इस प्रकार प्रदूषण की सीमाएँ लांघता जा रहा है।

ट्रेनों, ट्रामों, बसों एवं कारखानों का शोर-स्तर 57 से 61 डेसीबल तक हो गया है, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अधिकतम सीमा 35 डेसीबल है।

सरकारी स्तर पर पीने योग्य पानी उपलब्ध कराने की क्षमता भी पूर्ण नहीं है। तंग बस्तियों के लिए तो पीने लायक पानी भी नहीं दिया जाता। सरकार ने भी स्वीकारा है कि 16 से 40 प्रतिशत पीने का पानी प्रदूषित है। इससे विभिन्न प्रकार की बीमारियों का होना स्वाभाविक है।

नगरों एवं महानगरों से लाखों गैलन जहरीले मल-मूत्र को विभिन्न नहरों एवं नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है। इसके फलस्वरूप प्रदूषण एक नगर से निकलकर आगे तक बढ़ता जाता है। इस प्रकार प्रदूषित जल के प्रयोग से विभिन्न बीमारियों का फैलाव भी बढ़ने लगता है। इन बीमारियों का निदान एवं उपचार भी स्वास्थ्य सेवा के अभाव में नहीं हो पाता। प्रदूषित पानी पीने से आजकल नगरों का हर तीसरा व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में पेट की बीमारियों से ग्रस्त देखा जा सकता है।

प्रदूषित नगरों का बचाव

वर्तमान समय में नगरों एवं महानगरों पर बरबादी के बादल मंडरा रहे हैं और समय रहते यदि इस नगर संस्कृति के प्रदूषण को गंभीरता से नहीं लिया गया, तो आगे चलकर एक दिन यह मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन जाएगा। इसके लिए सबसे अहम बात उचित आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने की है। यदि इन गरीब तबकों को मकान बनाने हेतु उचित जमीन एवं मकान निर्माण की सुविधा उपलब्ध कराई जाए तो काफी हद तक इस समस्या पर नियंत्रण किया जा सकता है। ऐसे लोगों को लोकहित में आवास उपलब्ध कराना सरकारी उत्तरदायित्व के रूप में स्वीकारा जाना चाहिए। आवास की सुविधा उपलब्ध कराते समय उनके कार्यस्थल से उनके निवास की दूरी पर भी विचार किया जाना चाहिए। सामान्य रूप में कार्यस्थलों के पास ही निवास होना आवश्यक है।

शहरी मल-मूत्र नदियों में न बहाकर यदि खेतों तक पहुंचाने की योजनाएं बनाई जाएं तो उर्वरक के रूप में इसका बेहतर उपयोग हो सकेगा तथा प्रदूषण से भी बचाव हो सकेगा। बेकार कूड़े-करकट को भट्टियों में जलाकर ऊर्जा पैदा की जा सकती है। इसके अतिरिक्त जनसाधारण में राष्ट्रीय पर्यावरण को संतुलित रखने हेतु चेतना पैदा करना हर प्रकार से आवश्यक है, ताकि सामान्य जन का स्वास्थ्य और वातावरण दूषित होने से बचाया जा सके।

महानगरों में केवल नगर निगमों पर ही निर्भर न रहा जाए, बल्कि प्रदूषण दूर करने के प्रयासों हेतु अन्य माध्यमों का उपयोग भी किया जाना चाहिए तथा इस हेतु स्वयंसेवी संस्थाओं को भी उचित प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।



सबसे अहम बात तो यह है कि जिन कारणों से ग्रामीण अंचल के लोग शहरों की ओर पलायन करते हैं, उन कारणों को दूर करने के गंभीर प्रयास किए जाने चाहिए। रोजगार ही एक ऐसा मूल कारण है, जिनके लिए शहरों के प्रति उनका आकर्षण होता है; अतः ग्रामीण क्षेत्र में विभिन्न योजनाएं लागू की जानी चाहिए, जिससे गांवों में रहनेवालों को वहीं रोजगार मिल सके। इसके लिए ग्रामीण इलाकों में कुटीर उद्योगों का विकास करना बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकता है। कृषि हेतु आवश्यक साधनों की पूर्ति के लिए उद्योगों के स्थलों का चयन भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही किया जाना चाहिए।

शहरों एवं महानगरों में स्थित निगमों को भी प्रदूषण को रोकने हेतु विभिन्न प्रकार की प्रभावी योजनाएं लागू करनी चाहिए। यह उनका दायित्व है कि सरकार द्वारा बनाए गए तत्संबंधी कानूनों की पूर्ति में किसी प्रकार की कोई ढिलाई न बरती जाए। ऐसा होने पर ही प्रदूषण से बचा जा सकता है।



23.12.2022 को आयोजित नराकास, गुरुग्राम की बैठक एवं पुरस्कार वितरण की झलकियां





मैं बनी मधुमास आली!

आज मधुर विषाद की घिर करुण आई यामिनी,
बरस सुधि के इन्दु से छिटकी पुलक की चाँदनी
उमड़ आई री, दृगों में
सजनि, कालिन्दी निराली!

रजत स्वप्नों में उदित अपलक विरल तारावली,
जाग सुक-पिक ने अचानक मदिर पंचम तान लीं;
बह चली निश्वास की मूदु
वात मलय-निकुंज-वाली!

सजल रोमों में बिछे है पाँवड़े मधुस्नात से,
आज जीवन के निमिष भी दूत है अज्ञात से;
क्या न अब प्रिय की बजेगी
मुरलिका मधुराग वाली?



आईएसओ 9001:2015

वाष्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 5वां तल, "कैलाश", 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष: +91-11-23313131, 23313881, फैक्स: +91-11-23313134, 23314924, ई-मेल: ho@wapcos.co.in

निगमित कार्यालय: 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरुग्राम-122015, हरियाणा
दूरभाष: +91-124-2399428, फैक्स: +91-124-2397392, ई-मेल: mail@wapcos.co.in
ई-मेल: hindi@wapcos.co.in, वेबसाइट : http://www.wapcos.co.in